RNI No. 7127/60

डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City / 411 2023-25

संघशक्ति

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 62 अंक : 01 प्रकाशन तिथि : 25 दिसम्बर कुल पृष्ठ : 36 प्रेषण तिथि : 4 जनवरी 2025

शुल्क एक प्रति : 15/- वार्षिक : 150/- रुपये पंचवर्षीय 700/- रुपये दस वर्षीय 1300/- रुपये

101 वीं जन्म जयंती

श्रद्धेय पूज्य श्री तनसिंह जी

(25 जनवरी 1924 - 7 दिसम्बर 1979)

''मानवता का मार्गदर्शक एक युगद्रष्टा''

मैं निर्झर हूँ पर्वत से बह गहरा नीचे तक आया हूँ।
पगली धरती के आंचल को मैं तीर्थ बनाने आया हूँ।

शारीरिक शिक्षक संघ जिला बाड़मेर में नवचयनित पदाधिकारीयों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

दलपतसिंहजी महेचा
जिला संरक्षक
उप जि.शि.अ.
शा.शि.(माध्य.)बाड़मेर
मो. 9784776978

देवीसिंहजी भाटी
गोरड़िया
जिला महामंत्री
मो. 9828997677

रिड़मलसिंहजी राठौड़
बिशाला
जिला उपाध्यक्ष
मो. 9784329968

तनसिंहजी महेचा
बाड़मेर आगौर
जिला उपाध्यक्ष
मो. 9079398033

भूरसिंहजी राठौड़
उगेरी
जिला संगठन मंत्री
मो. 9828596856

भीखसिंहजी सोढ़ा
गिराब
जिला प्रचार मंत्री
मो. 9772866592

गोपालसिंहजी सोलंकी
मगरा
ब्लॉक अध्यक्ष बाड़मेर
मो. 94134915

भंवरसिंहजी राठौड़
स्वामी का गांव
ब्लॉक अध्यक्ष शिव
मो. 9214233354

उदयसिंह राठौड़
लाबराऊ
ब्लॉक अध्यक्ष रामसर
मो. 9928695303

धनसिंहजी धांधू
गंगासरा
ब्लॉक अध्यक्ष सेड़वा
मो.9460384253

:: शुभेच्छु ::

पन्नेसिंह सेहला	वालमसिंह आकोड़ा (पूर्व जिलाध्यक्ष)	पबसिंह चेतरोड़ी	दुर्जनसिंह खारिया	मेहताबसिंह आरंग	तुलछसिंह सुवाला
जोधसिंह लूणु	पर्बतसिंह ताणू रावजी	बाबूसिंह रामसर	लालसिंह आकोड़ा	अनुपसिंह लाम्बड़ा	प्रवेन्द्रसिंह भुरटिया
छुगसिंह खारा	कृष्णसिंह हनुमानगढ़	नरपतसिंह गिराब	नाथुसिंह थुम्बली	गुमानसिंह जालेला	सुरेन्द्रसिंह बावड़ी
कुन्दनसिंह बावड़ी	छैलसिंह हरसाणी	गोपालसिंह बलाई	प्रवीणसिंह देदुसर	नटवरसिंह झिंझनियाली	जोगेन्द्रसिंह रेडाणा
गणपतसिंह गंगासरा	शिशपालसिंह गंगासरा	हेमसिंह सेहला	वन्नेसिंह सेहला	बालसिंह इन्द्रोई	रावलसिंह हरसाणी
मनोहरसिंह गोरड़िया	भानुप्रतापसिंह कारटिया				

एवं समस्त स्वजातिय शारीरिक शिक्षक बंधु

संघशक्ति

4 जनवरी, 2025

वर्ष : 62 अंक : 01

-: सम्पादक :-

राजेन्द्र सिंह राठौड़

शुल्क - एक प्रति : 15/- रुपये, वार्षिक : 150/- रुपये, पंचवर्षीय : 700/- रुपये, दस वर्षीय : 1300/- रुपये

विषय - सूची

नव वर्ष संदेश 2025	श्री भगवान सिंह जी	04
समाचार संक्षेप		05
चलता रहे मेरा संघ	श्री भगवानसिंह जी रोलसाहबसर	07
पूज्य श्री तनसिंह जी (के सम्बन्ध में)	श्री चैन सिंह बैठवास	08
बाँहें फैलाकर	गिरधारी सिंह डोभाड़ा	10
जन कल्याण में क्षत्रियों की भागीदारी	स्व. नाहरसिंह जसोल	13
राजपूत	श्री युधिष्ठिर	16
परिश्रम से श्रेष्ठता की प्राप्ति	स्वामी श्री जगदात्मानन्द	19
मनोबल का साक्षी दिवेर का युद्ध	डॉ. श्री मातुसिंह मानपुरा	21
मातृशक्ति का दायित्व	श्री पुष्पेन्द्र सिंह	23
अहं भाग्यशाली क्षत्रियगोत्रे जात!!!	लक्ष्मी कंवर बड़ोड़ागाँव	24
अपनेपन की सीख	एक स्वयंसेवक	25
अन्तिम गुरु	संकलित	26
ईश्वरावतारों का वंशज क्षत्रिय समाज.....	श्री राजेन्द्र सिंह रानीगांव	28
कर्तव्य	श्री मनोज कुमार महेश्वरी	31
खुदड़ माता : श्री इन्द्र बाईसा	श्री भंवर सिंह मांडासी	32
अपनी बात		34

नव वर्ष संदेश 2025

प्रिय बन्धुओ!

अनेकों वर्षों के श्रम साध्य कर्म से संघ ने पूरे भारतवर्ष में अपना विस्तार कर संघ के संस्थापक पू. तनसिंह जी के सपनों को साकार किया है। पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक आपने धूम मचा दी। बालिकाओं और महिलाओं ने अपनी प्रचण्ड कार्य शक्ति से रणचण्डी का रूप दिखाया है।

आपकी आँखों में लाल डोरे देखकर मुझे बहुत प्रसन्नता होती है और भावी संघ की कल्पना उभर आती है। सभी लोगों के सहयोग की भावना से समाज में जागरूकता को अनुभव किया जा सकता है। इस बात का गर्व तो हमें होना चाहिए किन्तु अहंकार कभी नहीं। अपनी अन्तरात्मा का सदैव ध्यान बना रहना चाहिए। आप सभी समाज के हरकारे हैं, पहरेदार हैं, अगवा हैं। संसार आपके आचरण से प्रभावित होता है। सभी लोग आप की ओर देख रहे हैं। आपकी असावधानी समाज को नरक में धकेल सकती है और सावधानी स्वर्ग का मार्ग बता सकती है। परमेश्वर की कृपा बिना हम कोई भी महान व पुण्य कर्म नहीं कर पाते। इसलिए हम उसका स्मरण कभी नहीं भूलें।

संघ की 78 वर्षों की यात्रा में अनेकों लोगों का बड़ा सहयोग रहा है। ऐसे सहस्त्रों स्वर्गीय स्वयंसेवकों ने नींव के पत्थर बनकर निस्वार्थ और त्याग पूर्ण जीवन जीकर हमें हमारा मार्ग प्रशस्त किया है। इनके सहयोग को भूलना हमारी कृतघ्नता होगी। वो न होते तो हम न होते।

आओ हम 79वें वर्ष में प्रवेश करते हुए हमारे उज्ज्वल भविष्य का स्वागत करें। इति।

आप सबका

भगवान सिंह

समाचार संक्षेप

संस्थापक श्री की पुण्यतिथि पर देश भर में दी श्रद्धांजलि

7 दिसम्बर को श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी की 45वीं पुण्यतिथि पर देश भर में विभिन्न स्थानों पर श्रद्धांजलि सभाओं तथा स्मृति कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें समाज-बन्धुओं व स्वयंसेवकों ने अपने संघ के प्रणेता के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित किये। जयपुर स्थित केंद्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें माननीय संरक्षक श्री भगवानसिंह जी रोलसाहबसर, माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मणसिंह जी बैण्याकाबास एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक श्री महावीरसिंह जी सरवड़ी, श्री दीपसिंह जी बैण्याकाबास आदि सहित जयपुर शहर के स्वयंसेवकों द्वारा पूज्य तनसिंह जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। सहगीत व भजन गायन द्वारा पूज्य श्री के प्रति श्रद्धांजलि व्यक्त की गई। पूज्य श्री तनसिंह जी की जन्म स्थली बेरसियाला (जैसलमेर) में भी पुण्यतिथि के अवसर पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबूसिंह बेरसियाला ने पूज्य तनसिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में जानकारी दी। बाड़मेर मोक्ष धाम में पूज्य तनसिंह जी के स्मारक पर बाड़मेर में रहने वाले स्वयंसेवकों ने प्रातः 5.30 बजे पुष्पांजलि अर्पित की। यहाँ वरिष्ठ स्वयंसेवक नरपतसिंह चिराणा व संभाग प्रमुख महिपालसिंह चूली सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। सूरत (गुजरात) में 7 दिसम्बर को रात्रिकालीन भजन संध्या का आयोजन किया गया। दक्षिण गुजरात संभाग द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में संभाग प्रमुख खेतसिंह चांदेसरा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। भजन गायक अगरसिंह छतागढ़, भंवरसिंह ऑडिट, राजूसिंह रोहड़ी, स्वरूपसिंह मुनाबाव ने अपनी प्रस्तुति दी तत्पश्चात् प्रसाद ग्रहण किया गया।

पुण्यतिथि के अवसर पर जवाहरलाल नेहरू, विश्व-विद्यालय (जे.एन.यू) के क्षत्रिय विद्यार्थियों ने कावेरी हॉस्टल में कार्यक्रम आयोजित किया। निम्बाहेड़ा स्थित राजपूत छात्रावास परिसर में चित्तौड़ प्रान्त का कार्यक्रम आयोजित किया गया। यहाँ श्री क्षत्रिय युवक संघ के केन्द्रीय कार्यकारी श्री गंगासिंह साजियाली ने पूज्य तनसिंह जी के जीवन तथा कृतित्व पर प्रकाश डाला। जैसलमेर के तेजमालता गाँव में शाखा स्तर पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इसके अलावा सभी संभागों व प्रान्तों की विभिन्न शाखाओं में संघ बन्धुओं ने कार्यक्रम आयोजित कर अपने प्रणेता व मार्ग दृष्टा को श्रद्धांजलि अर्पित कर अपनी कृतज्ञता प्रकट की।

समीक्षा व कार्ययोजना बैठक :- उत्तर गुजरात संभाग ने 1 दिसम्बर को पाटन शहर में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। बैठक में पिछली बैठक से लेकर अब तक के संघ कार्य की समीक्षा की गई एवं आगामी कार्यों की कार्य योजना बनाई गई। बैठक में संभाग प्रमुख वनराजसिंह भैंसाणा एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक विक्रम सिंट कमाणा सहयोगियों सहित उपस्थित रहे।

बीकानेर में एक दिवसीय शाखा प्रमुखों का प्रशिक्षण :- बीकानेर संभाग में एक दिवसीय शाखा प्रशिक्षण कार्यशाला का 8 दिसम्बर को आयोजन किया गया जिसमें श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखाओं का महत्त्व, शाखा को रोचक बनाने के उपाय तथा शाखा प्रमुख व अन्य उत्तरदायित्व वहन करने वाले सहयोगियों के कर्त्तव्य, प्रतिवेदन तैयार करना, आदि विषयों पर चर्चा की गई। कार्यशाला का संचालन उगमसिंह गोकुल ने किया।

बीकानेर संभाग में लगने वाली शाखाओं के शाखा प्रमुख, शिक्षण-प्रमुख एवं विस्तार प्रमुखों ने भाग लिया। कार्यशाला में राजेन्द्र सिंह आलसर, रेवन्तसिंह जाखासर, बलवंतसिंह महणसर, शक्ति सिंह आशापुरा सहित बीकानेर शहर के स्वयंसेवकों की उपस्थिति भी रही।

संघशक्ति में पारिवारिक स्नेह-मिलन व पौष बड़ा कार्यक्रम :- जयपुर संभाग के स्वयंसेवकों का पारिवारिक स्नेह-मिलन तथा पौष बड़ा भोजन प्रसादी का कार्यक्रम 15 दिसम्बर को केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति भवन में आयोजित किया गया। संरक्षक श्री भगवानसिंह जी रोलसाहबसर, संघप्रमुख श्री लक्ष्मणसिंह जी बैण्याकाबास के सानिध्य में 170 संघ बन्धु व परिवारजन कार्यक्रम में उपस्थित हुए। संरक्षक श्री ने पारिवारिक स्नेह-मिलन का महत्त्व बताते हुए फरमाया कि जब तक संघ हमारे घरों में प्रवेश नहीं करेगा तब तक संघ से हमारा जुड़ाव अधूरा है अतः समय-समय पर ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने चाहिये। पारिवारिक परिचय भी करवाया गया।

●

जिसके बल पर चरण बढ चले

श्वासों की राहों पर चलता, उर में दीपक सा नित जलता,
दुख में आँसू बनकर ढलता, पल-पल परिवर्तन बन छलता,
मेरे अकुलाते कानों को, उसका कुछ संदेश सुना दे!

सघन मिमिर में क्षीण प्रकाशा, अमित निराशा में मृदु आशा,
क्षण-क्षण गिरते का विश्वास, जो है भाग्य खेल का पासा,
मेरे विकल दृगों को कोई, उसका शुभ दर्शन करवा दे!

पथ दर्शक पाथेय वही है, अन्तिम जीवन ध्येय वही है,
प्यासे उर का पेय वही है, गद्य वही है, गेय वही है,
उस सूने पन के सरगम की, कोई मृदु झंकार सुना दे!

खोज कहाँ उसको पाऊँगा, या निज को खोता जाऊँगा,
कौन साधना होगी ऐसी, जिसमें मैं भी खो जाऊँगा?
कौन पंथ पहुँचाता उस तक, इतना कोई भेद बता दे!

दुनिया की दुविधा के धागे, उसके उलझे कदम के आगे,
मेरे कुंठित भाव अभागे, कह कब, नई चेतना जागे?
जिसके बल पर चरण बढ चलें, मुझको मंजिल तक पहुँचा दे!

चलता रहे मेरा संघ

(माननीय भगवानसिंह जी रोलसाहबसर के मेवाड़ क्षेत्र के प्रवास के समय एक स्थान पर दिए गये उद्बोधन का संक्षेप।)

आपसे मिलने के लिए मैं अनेकों बार इस क्षेत्र में आया हूँ। इसीलिए यह इच्छा हुई कि अब फिर इधर आऊँ, आप लोगों से मिलने के लिए। यह जानते हुए भी कि मेरे आ जाने से भी यहाँ सामाजिक दृष्टिकोण से कुछ बहुत अच्छा परिणाम हो जाएगा, यह आवश्यक नहीं यहाँ आने से ही समाज बन्धु संस्कारित हो जाएँगे ऐसा नहीं है, यह भली प्रकार जानता हूँ। लेकिन मैं आप सब में भगवान की कल्पना करता हूँ। यह बहुत ऊँची कल्पना है। मैं सांसारिक प्राणी हूँ, संसार में रहता हूँ और आप में ही समाज को देखता हूँ। इसलिए मैं किसी व्यक्ति से नहीं, समाज से मिलने आया आता हूँ। इसलिए मैंने एक दिन का व्यार्यक्रम यहाँ के लिए मेरे दृष्टिकोण से बनाया था।

मैं आप लोगों से मिलने आ गया। यह मिलन कार्यक्रम ही है। कोई संस्कार निर्माण करने हेतु नहीं आया। न कोई उयदेश या शिक्षा देने आया हूँ। बस मिलने आया हूँ और सब जगह मैं मिलने ही जाता हूँ। मैं तो समझा हूँ कि मैं कहीं जाता नहीं हूँ, मुझे ले जाया जाता है। अब देख लीजिए कि मैं एक दिन का कार्यक्रम लेकर आया था और यहाँ कार्यक्रम पाँच दिन का बन गया है। सोचा कुछ था पर हो गया कुछ और। आप सब के जीवन में भी यह व्यतीत होता है। आप करना कुछ चाहते हैं और हो जाता है कुछ और। अपने जीवन पर यदि दृष्टि डालें तो जन्म से लेकर अब तक कितने काम थे जो आप करना चाहते थे मगर नहीं हुए और ऐसे कितने काम थे जो आप नहीं करना चाहते थे पर हो गए। तो फिर चलती किसकी है? हमारी स्व की तो चली नहीं। लेकिन जो इस बात पर विचार करता है कि करता मैं नहीं हूँ मुझसे कराया जाता है। हम जो करना चाहते हैं उनमें से कुछ होते हैं, लेकिन बहुत सारे नहीं होते। अर्थात् मैं करना नहीं चाहता पर भगवान मुझे वहाँ ले जाना चाहते हैं।

कई लोग डॉक्टर बनना चाहते थे लेकिन डॉक्टर नहीं बन पाए। डॉक्टर के चपरासी भी नहीं बन पाए। पर बन गए इतने बड़े आदमी कि सारी दुनियां उनके पांवों में झुकती है। इस तरह के परिणाम आपने भी अनेक देखे होंगे। यह सब देखते हुए भी हम यह समझ नहीं रहे हैं कि करवाने वाला कोई अन्य है। जो इस बात को भली प्रकार समझ लेता है, पहचान लेता है, वही स्वस्थ है। वह धीरे-धीरे संस्कारित होता जाता है। लेकिन हम देखते हुए भी नहीं देख रहे हैं, आँख मूंदे चलते रहते हैं। जो हम कर रहे हैं उसके परिणाम को भी हम जानते हैं, उसके बाद भी हम करते हैं।

महाभारत में दुर्योधन ने एक वाक्य कहा कि मैं जानता हूँ कि मुझे क्या नहीं करना चाहिए, लेकिन वह किए बिना मैं रह नहीं सकता, मैं उधर ही प्रवृत होता हूँ। यह एक दुर्योधन की बात नहीं है, हम सब ऐसा करने वाले दुर्योधन ही हैं। कौन नहीं जानते कि संस्कार कहाँ मिलते हैं। सब जानते हैं, बोलते चाहे न हों। संस्कार परिवार से मिलते हैं। माता-पिता से मिलते हैं। घर से मिलते हैं। यह सब जानते हैं। फिर संस्कारों के लिए इस सभा की क्या आवश्यकता थी? सब जानते हैं लेकिन करते नहीं। आपस में हम मिलें तो यह स्मरण करें कि संस्कारों के लिए घर को स्वस्थ श्रेणी का बनाएँ, हम स्वयं ध्यान रखें और प्रयास करें कि हमारे बच्चे संस्कारित बनें। श्री क्षत्रिय युवक संघ का मुख्य रूप से यही प्रयास है। ●

चलता रहे मेरा संघ, यही तो मेरा जीवन धन।

पूज्य श्री तनसिंह जी (के सम्बन्ध में)

''जो कुछ देखा, समझा व अनुभव किया''

– चैनसिंह बैठवास

पूज्य श्री तनसिंह जी के प्रिय शिष्यों में से एक शिष्य थे श्री कैलाशपाल सिंह जी इनायती। देव कृपा से पूज्य श्री के सान्निध्य में रहने का इन्हें सुअवसर मिला। साथ में रहते पूज्य श्री के हृदय में उठने वाले हाव-भावों को इन्होंने देखा है, समझा है। पूज्य श्री के हृदय में उठने वाले हाव-भावों को समझने की इनमें समझ थी। पूज्य श्री तनसिंह जी के सम्बन्ध में श्री कैलाशपाल सिंह जी इनायती ने जो कहा, उन्हीं की जुबानी –

''सन् 2017 के उच्च प्रशिक्षण शिविर बूढा पुष्कर में एक दिन के लिये मैं गया। शिविर में पहुँचते ही मेरे स्मृति पटल पर सन् 1965 के बूढा पुष्कर शिविर की स्मृति उभरने लगी। दोपहर का समय था घटों में पानी भरने का कार्यक्रम चल रहा था। पूज्य श्री तनसिंह जी के सामने से एक बालक, जिसकी लम्बाई करीब-करीब बाल्टी के समान थी, बाल्टी को भर कर-डगमगाता हुआ अपने घट में जा रहा था। दो-तीन कदम चल कर बाल्टी को जमीन पर रखता, पुनः उठाकर पूरी ताकत लगाकर पुनः दो-तीन कदम चलता। उसकी इस क्रिया को देखकर पूज्य श्री भाव-विभोर हो गए और उनकी आँखों से कृतज्ञता के आँसू छलक पड़े। पूज्य श्री ने सोचा होगा कि जिस कौम में ऐसे नादान बच्चे भी अपने सम्पूर्ण भाव से बल लगाकर कर्म में रत होते हैं, उस कौम को उठने से कौनसी परिस्थिति रोक सकती है। इसी कारण से कृतज्ञता के आँसू छलक पड़े। मैं खो गया उनकी अश्रु भरी कहानी में।

''मैं और पूज्य श्री एक बार रेल में यात्रा कर रहे थे, उस समय हमारे पीछे बैठी हुई एक महिला अपने पास बैठी महिला यात्री को अपने जीवन की दुखान्त घटना सुना रही थी। वह दुखान्त घटना हमारे कानों में स्पष्ट सुनाई दे रही थी। उसकी दर्द भरी कहानी को सुनकर पूज्य श्री व्यथित हो गए और उनकी आँखों से आँसू छलक पड़े। मैं उनकी अश्रुभरी कहानी में गोते लगाने लगा।

''शिविरों में विदाई के प्रवचनों में द्रोपदी की पीड़ा की अभिव्यक्ति करते समय वे स्वयं व्यथित हो जाते। उनकी आँखें जलजली हो जाती। अवरुद्ध कण्ठ स्वर से कहते कि जब श्रीकृष्ण कौरव व पाण्डवों में समझौता करने के लिये जा रहे थे तब द्रोपदी ने खुले केशों को हिलाते हुए, उनका मार्ग काट दिया। श्रीकृष्ण को यह संदेश दे दिया कि कृष्ण तुम समझौता कराने जा रहे हो, यदि तुमने समझौता करा दिया तो मेरी प्रतिज्ञा का क्या होगा, जो मैंने दुशासन के खून से बालों को धोकर संवारने की प्रतिज्ञा की थी। व्यथित द्रोपदी के वेदना से व्यथित होकर पूज्य श्री के कण्ठ अवरुद्ध हो जाते थे। इस घटना की अभिव्यक्ति का अभिप्राय शिविरार्थियों को यह संदेश देने का था कि शिविर से जाने के बाद तुम्हारे जीवन में विपरीत परिस्थितियाँ आने पर उन विषम परिस्थितियों से समझौता मत कर लेना। यदि समझौता कर लिया तो मेरी कौम के खुले बाल कैसे संवारे जाएंगे, कौम की जागृति का क्या होगा। उनकी पीड़ा आँखों से बहने लगती तो शिविरार्थियों की आँखों से इतने आँसू झरते कि जमीन पर उनके सामने गीले दाग बन जाते।

''हल्दी घाटी शिविर में चेतक की स्वामी भक्ति के प्रति कृतज्ञता जब आँसू बन बही, तो वे गा उठे –

बेदर्द न बन रे याद में अब, जल ढलता है तो ढलने दे।।
यह तो केवल पशु नहीं था, स्वर्ग का शापित देव पुरुष था।
यह मूक नहीं था इसकी भाषा, कोई सुनता है तो सुनने दे।।

''उस समय उपस्थित श्रोताओं के इतने आँसू बहे थे कि वहाँ की पूरी जमीन गीली हो गई । इसी हल्दी घाटी में चलते युद्ध के बीच शक्तिसिंह प्रताप से आकर ऐसे मिला कि वे गुनगुनाए बिना नहीं रह सके –

यहीं शक्तिसिंह आ के मिला, राम से ज्यों था भरत मिला।
बिछुड़े दिल यदि मिलते हों तो, पगले अब तो मिलने दे।।

''इतना ही नहीं हल्दीघाटी के पीले रंग के पत्थरों को भी देखकर उनसे रहा न गया और भावना बह चली –

हर पत्थर किसी की याद करके पड़ गया पीला,
देख लो पड़ गया पीला।

''महाराणा प्रताप की याद में, हल्दी घाटी में जूझे देश के परवानों की याद में पत्थर तो पीले पड़ गए और वे द्रवित हो गए।

''क्षिप्रा के तीर पर बनी दुर्गादास की समाधि पर उज्जैन शिविर में पहुँचे तो उनकी व्यथा बह चली –

मेरे वीर दुर्गादास! लौट के आ रे! लौट के आ!
पाल पोष बड़ा किया था राज्य भी लौटा दिया,
काश मेरे कुल की रीत, देश से निकाल दिया,
मेरी कृतघ्नता को वीर एक बार भूल जा!
लौट के आ रे! लौट के आ!
तेरी समाधि चीखती है वियोगिनी सी बनी,
उसी के आँसुओं से क्षिप्रा हो गई मंदाकिनी!
तेरी यादगार की तू याद ले के जा रे! आ!!
लौट के आ रे! लौट के आ!
घोड़े की पीठ पर भी रोटी सेकना नहीं सुना,
ठोकर लगाये राज्य के वो सिपाही ना सुना!
उपेक्षितों की धड़कनों को आज सुनके जा रे आ!!
लौट के आ रे! लौट के आ!
प्रमास एकता के तेरे देश नहीं भुलाएगा,
तेरे बिना बिछुड़े हुओं को कौन एक बनाएगा!
टूटी हुई है शृंखला, ये कड़ी तो जोड़ के जा!!
लौट के आ रे! लौट के आ!

''तेरे उत्साह, त्याग, बलिदान की याद से जो मैं व्यथित हो रहा हूँ, व्यथा मेरी तू ले के जा। कृतज्ञता से भाव विभोर हो बह रही उनकी अश्रुधारा में श्रोताओं की आँखों से बही धारें भी बह चली क्षिप्रा की ओर।

''वे पहुँचे महाराणा सांगा के युद्ध क्षेत्र खानवा में, जहाँ महाराणा सांगा के घोड़े दौड़ रहे थे– बड़बड़ां–बड़बड़ां। मृत्यु शैय्या पर लेटे महाराणा अपने अधूरे अरमानों पर व्यथित थे। काश! मुझे अपने ही धोखा न देते। यह धोखा ही मेरी हार का कारण बना, अन्यथा मैंने बेजोड़ संगठन बनाया था। धोखे से मेरे सपने चूर-चूर हो गए। सांगा अपने शरीर के नवासी घावों से व्यथित नहीं थे, धोखे के कारण निर्णायक जीत का सपना अधूरा रह गया, उससे व्यथित थे। सांगा की उस व्यथा को कहानी का रूप देकर पूज्य श्री ने उनके संगठन के सपने के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

''स्वयं पूज्य श्री ने भी कौम का एक बेजोड़ संगठन बनाने का स्वप्न देखा है। महाराणा सांगा ने संगठन के लिये जो प्रयास किया, उससे कहीं अधिक श्रम व संघर्ष पूज्य श्री ने किया। वे भी अपने संगठन के लोगों से यह कभी अपेक्षा नहीं करेंगे कि उनमें से कोई धोखा दे। जो धोखा देगा, विश्वासघात करेगा, वह कौम के संगठन पर आघात करेगा। इसलिए सर्वप्रथम मैं स्वयं अपने आपको टटोलूं, क्या मैं उनके स्वप्न के अनुसार संगठन की कड़ी बना हुआ हूँ? यदि नहीं, तो सुदृढ़ कड़ी बनने की साधना में नियोजित रहूँ। विधाता से यही प्रार्थना है कि यदि ऐसा मैं न कर सकूं तो मेरी जीवन लीला समाप्त कर दे पर विश्वासघात की डगर की ओर नजर तक न जाए। कौम की व्यथा से उमड़े आँसुओं की कहानी अविरलरूप से चलती रहे।''

(क्रमशः)

बाँहें फैलाकर

– गिरधारी सिंह डोभाड़ा

गुजरात में एक प्रथा है कि जब खेतों में फसल में दाने लगने शुरू हो जाते हैं, तब पक्षियों से उन्हें बचाने के लिए दो लकड़ियों को, एक आडी और एक खड़ी बांधकर उसे पुराना कमीज और पायजामा पहना कर, ऊपर छोटी मटकी को उल्टी लगाकर खेतों में खड़ा कर दिया जाता है, जिसे 'चाडिया' कहा जाता है। इस नकली आदमी को देखकर पक्षी उसके डर के मारे उड़ जाते हैं और दाना चुग नहीं पाते हैं। इसके विपरीत माँ राजपूती कौम के खेत में मुरझाए हुए फसल के पौधों के बीच एक सज्जन मोटे कपड़े की सफेद धोती, मटिया रंग का कमीज और सिर पर मटिया साफा बाँधे, अपने दोनों हाथ फैलाकर युवकों को पुकार रहा है-आओ! इस खेत के दाने चुग लो और मुरझा रहे इन पौधों को खाद और जल दो। ये पौधे सदियों से राह देख रहे हैं, प्रतीक्षा कर रहे हैं कि कोई आवे और सूख जाने से पहले ही सिंचाई करके इन्हें बचाये तथा खाद देकर इन्हें सशक्त बनाये। इन दानों को नया जीवन दान दे, इनमें नई चेतना जगाये ताकि ये भी अपने त्याग और बलिदान से असंख्य नये दाने उगाएँ और खेत को नई फसल से हरा-भरा कर दे। यह खेत है-माँ राजपूत कौम और बाँहें फैलाकर पुकारने वाले थे श्रद्धेय पूज्य तनसिंहजी।

पूज्य श्री तनसिंह जी ने पिलानी में स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त करते समय अपने समवयस्क कुछ राजपूत युवकों को बुलाकर उनके सामने अपने विचार व्यक्त किए कि तन्द्रावस्था में पड़ी माँ राजपूत कौम को जगाने के लिए और उसमें नवचेतना भरने के लिए कुछ करना चाहिए। कौम के प्रति पूज्यश्री के पवित्र भाव और सद्विचारों ने उचित असर किया और सन् 1944 की दीपावली के दिन कौम की सेवा के लिए, उसमें नव जागृति लाने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की।

प्रारम्भिक अवस्था में तो अन्य संस्थाओं की तरह साल में एक दो अधिवेशन बुलाकर कुछ प्रस्ताव पारित किए गये, लेकिन इस प्रणाली से पूज्यश्री संतुष्ट नहीं थे। जैसे जीवित, स्वस्थ और सशक्त रहने के लिए नियमित और निरन्तर भोजन, स्नान, परिश्रम आदि की आवश्यकता रहती है, उसी प्रकार प्रमाद में, चिन्तनहीनता में पड़ी कौम में नई चेतना भरने के लिए, उसमें वैचारिक क्रान्ति लाने के लिए नियमितता और निरन्तरता की आवश्यकता रहती है। यह विचार पूज्यश्री ने अपने सहयोगियों के समक्ष रखा। सहयोगियों ने पूज्यश्री के प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार किया और उसकी जिम्मेवारी पूज्यश्री को सौंपी गई। यह कार्य प्रणाली 22 दिसम्बर सन् 1946 के दिन से निरन्तर, नियमित, निश्चित समय पर, निश्चित स्थान पर शाखाओं, शिविरों, स्नेह-मिलनों के रूप में चल रही है।

समय बीतने लगा। पूज्यश्री का प्रेम, स्नेह, दुलार, त्याग और समता भरी बाँहें फैलने लगी। विस्तारित होने लगी। माँ रजपूती ने विश्वास भरी गहरी साँस ली कि मेरा सोया गौरव पुनः प्राप्त करवाने के लिए कठोर परिश्रमपूर्ण किसी की भुजाएँ विस्तार पा रही हैं। शमाएँ जल उठी, पतंगे उमड़ने लगे।

पूज्यश्री ने गीता का गहन अध्ययन किया। गीता के माध्यम से श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, सांख्ययोग के भाव को पूज्यश्री ने गहन रूप से समझा, आत्मसात किया और आचरण में ढाला। क्षात्रधर्म का महत्त्व और क्षत्रिय के कर्तव्य को समझा। व्यक्ति अपने स्वाभाविक कर्म द्वारा ही चारों पुरुषार्थ- अर्थ, काम, धर्म और मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है।

क्षत्रिय का स्वाभाविक कर्म है क्षात्रधर्म का पालन। क्षात्रधर्म का पालन क्षत्रियत्व प्राप्त करने से ही हो सकता

है, अतः क्षत्रिय के गुण आचरण में आना आवश्यक है। क्षत्रिय के गुण हैं–

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं, युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च, क्षात्रं कर्म स्वभाव जम।।

इन गुणों को आत्मसात करने से ही क्षात्रधर्म का पालन हो सकता है। पूज्यश्री ने अनुभव किया कि वर्तमान में कई शब्तादियों से क्षत्रिय, राजपूत अपने इन गुणों से विमुख हो रहे हैं, क्षत्रिय अपने स्वाभाविक गुण भूल चुके हैं। पूज्यश्री ने समझाया कि ये गुण प्रवचन, चर्चा, पठन मात्र से ही आत्मसात नहीं हो सकते, इसके लिए निरन्तर और नियमित अभ्यास अत्यन्त आवश्यक है। निरंतर और नियमित अभ्यास से ही अपने आचरण में आते हैं। बिना आचरण के मात्र पढ़ लेना, सुन लेना आदि निरर्थक ही हैं। इसके लिए संघ की कार्यप्रणाली में पूज्यश्री ने शाखाओं, शिविरों आदि के कार्यक्रमों में खेल, चर्चा, प्रवचन, सद् साहित्य पठन और उसके अभ्यास के साथ आत्मावलोकन को भी महत्त्व दिया। संघ कार्यक्रमों में खेल, चर्चा, सहगायन, बौद्धिक, विनोदसभा इत्यादि कोई भी कार्य अर्थहीन नहीं है। छोटे बालकों से लेकर युवकों, प्रौढ़ों, कृषक और पढे-लिखों को भी आकर्षित करते हैं। अब तो मातृशक्ति भी संस्कारित प्रणाली में साक्रिय है।

समझ के साथ-साथ पूज्यश्री की बाँहें फैलती गई। इन बाँहों का स्नेहालिंगन पाने के लिए कारवां बढ़ता गया, जिसका अनुभव संसार ने 22 दिसम्बर, 2021 के दिन जयपुर में और 28 जनवरी, 2024 के दिन दिल्ली में किया। श्री क्षत्रिय युवक संघ के अलावा समाजोत्थान के लिए कई संस्थाओं ने जन्म लिया और उनका इतिश्री भी हो गया। क्यों? क्योंकि आज चारों ओर फैली महत्त्वाकांक्षा तथा अहंकार की बीमारी का इलाज प्रणाली में नहीं होगा। तो उत्थान संभव ही नहीं है।

क्षत्रिय युवक संघ का विस्तार हो रहा है क्योंकि उसके पौधों को खाद उसके संस्थापक के निज के अहं की आहुति का डाला गया है। अपने स्वयं के अरमानों को जलाकर राख कर दिए थे और कौम के अरमानों को अपने अरमान बना लिए थे। त्याग और बलिदान श्री क्षत्रिय युवक संघ की नींव है, उसकी आधारशिला है। श्री क्षत्रिय युवक संघ में लोग आते गये, आ रहे हैं, लेकिन जो-जो अपने निज अहं और निज स्वार्थ का त्याग नहीं कर सके, निजी महत्त्वाकांक्षाओं का बलिदान नहीं कर सके वे संघ से किनारा कर चले, किनारा कर लेते हैं। पूज्यश्री ने अपने निज के परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी सीमित कर दी और संघ परिवार के प्रति विस्तृत कर दी। चौपासनी आन्दोलन और भूस्वामी आन्दोलन के सहयोग और सफलता का यही कारण था।

पूज्य श्री ने लिखा, गाया –

कौम के अरमान मुझ में बोलते हैं।

पूज्यश्री ने अपने लिए न उच्च सिंहासन चाहा और न स्वर्ग का मार्ग। उन्होंने तो केवल ऐसा पुष्प बनना चाहा जो अपनी सौरभ फैलाकर जग को रिझा पाए। पूज्यश्री को परम शक्ति पर पूरी आस्था थी, इसलिए उन्होंने गाया है–

तुम सब जानती व्यथा हमारी, किसको पुकारें माँ।

पूज्यश्री ने अपने आपको परम शक्ति के हाथों सौंप दिया था–

दे दूँ उसको बाँह जिसके हाथ जगत की।

और प्रार्थना की –

देव तुम्हारे सन्मुख तुच्छ हैं,
पर हमको स्वीकार करो।

और कहा, मैं क्या हूँ? मैं तो केवल तेरा यंत्र ही हूँ–

सूत्र तेरा नृत्य मेरा, यंत्री तू मैं यंत्र तेरा।

पूज्यश्री के जीवन में कई उतार-चढ़ाव आए लेकिन पूज्यश्री चढाव में न बहके और उतार में न हिम्मत हारे। स्नेह और नफरत, सहयोग और विरोध, सबको बिना विचलित हुए स्वीकार कर लिया। आप श्री ने गाया –

किसने मुझे कहा था, धोखा कभी न दूंगा।
मैंने कहाँ कहा था, तेरा प्यार ही मैं लूंगा।।
जिसने दिया है जो भी, हँसकर लिया है मैंने,
प्याले पिये जहर के, तेरे समझ के मैंने,
अपने नहीं तो सोचा, गैरों को ही सहूंगा।

पूज्यश्री ने अभियोगियों को भी ललकारा –

अभियोगी रे भरी कचहरी मेरा दोष बताना रे।
क्या इन आँखों का पानी झूठा या झूठा अभियोग।।
क्या वह तेरी आग नहीं है, जलते जिसमें प्राण।
रे नादां तू भूल गया है, हम को आती याद।
फिर भी बैरी अपना बताके चाहे बैर चुकाना रे।

पूज्यश्री की उदारता तो देखो, सबको अपना ही जताया। किसी को भी दोष नहीं दिया–

तुमको क्या दें दोष ऐसा ही आया, सारा जमाना रे।

पूज्यश्री की समाज से कोई निजी चाह नहीं थी। हाँ, चाह थी तो केवल एक ही चाह थी–

चाहे एक ही जले, पूरे स्नेह से जले, ऐसे दीप चाहिए।
जिसकी काँपे नहीं' लो, कहीं दुनिया में हो, ऐसी ज्योत चाहिए।
किन्तु स्वाति के सिवा जिसकी कोई नहीं चाह, ऐसी सीप चाहिए।

पूज्यश्री कहते हैं –

बिछुड़े हुए बुलाकर, मेले लगा रहे हैं।
अपने करों से अपनी तकदीर बना रहे हैं।
भूखे हैं स्नेह के हम, किन्तु कभी न मांगें।
प्याले तेरी नफरत के पीते ही जा रहे हैं।।

पूज्यश्री ने कौम की जागृति के लिए कर्मयोग की साधना को ही सत्य साधना माना है, संगठन के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना ही कर्मयोग की सत्य साधना है। पूज्यश्री करते हैं–

अरे कौम के भाग्य में अब तो आया नया प्रभात।
रात भर सोने बाले।।

आज स्थूल रूप में पूज्यश्री हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन सूक्ष्म रूप में श्री क्षत्रिय युवक संघ में वे उपास्थित हैं और संध में जुड़ने वालों को बांहें फैलाकर कहते हैं–

स्वागत मेरी मंजिल का इक नया मुसाफिर आया रे।

कौम के मसीहा, युगपुरुष, पूज्य श्री तनसिंह जी के बारे में कुछ लिखना मेरे लिए चिड़िया द्वारा अपनी चोंच से अगाध सागर को उलटने के समान है, फिर भी पूज्यश्री की 101वीं जन्म जयन्ती (25 जनवरी, 2025) पर पुष्प की इस छोटी-सी पंखुड़ी के रूप में श्रद्धांजलि अर्पित करने के भावों को रोक न सका।

हे युगपुरुष! कौम के मसीहा आपको शत् शत् प्रणाम।

●

यौवन पकता है निमग्न अपने ही रस में
कला सिद्ध होती जब सुषमा की समाधि में
विपुल काल तक कलाकार खोया रहता है।
वह सब होगा पूर्ण, एक दिन तुम चमकोगे
जैसे यह नक्षत्र चमकते हैं अंबर पर।
बनो संत से चारु कि जैसे यूनानी थे
जो अदृश्य हैं देव उन्हें पूजा सन्मन से
और मर्त्य मनुजों से भी मत आँख चुराओ।

जन कल्याण में क्षत्रियों की भागीदारी

– स्व. नाहरसिंह जसोल

महाकवि कालिदास ने रघुवंश में ''क्षत्रिय'' की बड़ी सुन्दर व्याख्या की है :

क्षत्रत्किल त्रायत इत्युदग्र क्षत्रस्य शब्दो भुवनेषु रूढः
राज्मेन किं कद्वीपरीत वृतेः प्राणेरूप कोशमलीन सर्वाः

क्षमा से त्राण करने वाला अर्थात् जो समाज को हानि से, अनैतिकता, अनाचार, भूख, अज्ञान से बचाये वही क्षत्रिय है।

विधाता ने क्षत्रिय को ''जन कल्याण'' हेतु ही बनाया, जन कल्याण की भावना क्षत्रिय के खून में है और इसका साक्षी हमारा ज्वलंत इतिहास है। भारतीय संस्कृति के निर्माण में ऋषियों, मनीषियों की महती भूमिका रही है और उनके बताए हुए सत्मार्ग पर चलना क्षत्रियों ने अपना धर्म समझा। क्षत्रिय का धर्म ही क्षात्रधर्म कहलायाः राजयोग में सुन्दर वर्णन है:

धर्म युद्धे शरीरस्य मोहो यस्मे न जायते ।
अस्त्र शस्त्र सम्भायासी स्वदेश वीर बान्धवः।।
सहायतां–प्रकुरुते वीराणाश्च निरन्तरम।
मातृभूमि प्रियश्चापि, दीनानां हितकारकः।।

अर्थात् जिसके लिए धार्मिक युद्ध में अपने शरीर का मोह नहीं होता, जो मातूभूमि का प्रेमी और दीन जनों का हितैषी होता है जो उपकार करने में अग्रणी है तथा जो वंश के नियमानुसार चलने वाला निस्वार्थी निर्लोभी है वही शुद्ध ''वीर'' ''क्षत्रिय'' है।

क्षात्र धर्म की ज्योति को आलोकित करने में चारण कवीश्वरों का अटूट योगदान सदियों से रहा है। आगरा से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका ''चारण'' के मुख पृष्ठ पर ये पंक्तियाँ छपती थी,

भूले को फिर राह दिखाना, देना कर्म मार्ग उपदेश।
क्षात्रधर्म को जागृत करना, चारण का पुनीत उद्देश्य।।

अतः क्षात्रधर्म के पुनीत कुम्भ के अवसर पर चारण कविश्वरों को शत् शत् प्रणाम जिन्होंने क्षत्रिय इतिहास संस्कृति, को अजर अमर कर दिया।

अस्तुः क्षात्रधर्म का स्वरूप अत्यन्त उज्जवल माना गया है। इसमें त्याग, बलिदान, सत्य, धैर्य, साहस, धरती प्रेम, मर्यादा और आन जैसे उच्च आदर्श मुख्य रूप से रहे हैं और इन आदर्शों को जीवित रखने हेतु क्षत्रियों ने वो आदर्श कार्य प्रस्तुत किये जो संसार के किसी भी देश में नहीं मिलेंगे। भारतवर्ष में विभिन्न संप्रदायों में जितने भी महापुरुष हुए उनमें से अधिकांश क्षत्रिय ही थे, राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, पीपाजी, जांभाजी, मलीनाथजी, रामसा पीर आदि। इन सभी का जीवन ही लोकहित में बीता। इस परम्परा का राजस्थान, मध्यप्रदेश, गुजरात उत्तरप्रदेश, सिंध के अमरकोट के भाग में विशेष प्रभाव रहा।

क्षत्रियों ने जनहितार्थ में क्या नहीं किया– कितने दृष्टांत इस थोड़े से समय में दिये जायें? इन्सान यदि अपनी जिन्दगी खपा दे तो भी अनगिनत, अनेक, जनहितार्थ कार्यो का वर्णन नहीं हो सकेगा।

सर्वप्रथम शरणागत की परम्परा को ही लीजिये– इसीलिए तो क्षत्रियों का विरुद है **गौ–ब्राह्मण प्रतिपाळक, शरणायां साधार–**

जो शरण में आ गया, मिल गया अभय दान उसे। मर गये, बर्बाद हो गए, परन्तु शरण में आये को निकाल कर नहीं दिया। दृष्टान्त सैंकड़ों नहीं लाखों हैं श्रीमान परन्तु जोधपुर महाराजा मानसिंह जी का ही उदाहरण पेश करूँगा जिन्होंने अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध अप्पा साहब भौंसले को शरण देकर उनकी प्राण रक्षा की।

क्षत्रियों ने दो ही उद्देश्यों से युद्ध लड़े राष्ट्र रक्षा, एवं धर्म रक्षा। जीवन पर्यन्त भूखे–प्यासे पहाड़ों में भटकते–

प्रताप का नाम आज भी अमर है- भारत के अनेक शासकों ने और उनके साथ सैकड़ों क्षत्रियों ने एवं क्षत्राणियों नें प्राणों की आहुति दे दी- किसके लिए? आन, मान, मर्यादा की रक्षार्थ!! जब जब भी धर्म पर अधर्म का हमला हुआ क्षत्रिय मर मिटे-एक ही उदाहरण लीजिये -

संवत् 1774 में खंडेला के सुजानसिंह ने मोहनदेवजी के मंदिर को औरंगजेब की फौज द्वारा ध्वस्त करने से रोकने के लिए अपने प्राण दे दिये।

शादी करके वापस जा रहे सुजाणसिंह ने एक बेरे वाले से सिर्फ यह दोहा सुना-

झिरमिर झिरमिर मेहा बरसे, मोरां छतरी छाई।
कुळ में है तो आव सुजाणा, फौज देवरे आई।।

और सुजाणा अपनी नवविवाहिता को डोली में ही छोड़ कर मंदिर की रक्षार्थ कट मरा:

ढातां मंदिर सिर दियो, आतां दल अवरंग।
इण बातों सूजो अमर, रायसलोतां रंग।।

पुष्कर के मंदिरों की रक्षार्थ राजसिंह राठौड़ भी कट मराः

कूरम खन्डेलै, कमंध मेड़तै।
मरण तणौ बांधौ सिर मौड़।।
सूजा जिसो नहीं कोई सेखो।
राजड़ जिसो नहीं राठौड़।।

गौ रक्षा के लिये पाबू राठौड़ की कथा कौन नहीं जानता। पाबू जैसे चरित्र की अवधारणा समाज में कोई नई घटना नहीं थी, वह उस काल की एक ऐसी आवश्यकता थी जिसकी पूर्ति पाबू ने की। पाबू के उदात्त चरित्र का मुख्य तत्व उसका वचन निर्वाह है और उस हेतु पाबू ने प्राण न्योछावर कर दिये। वचनबद्धता के पीछे गौ रक्षा का भाव, चारण और राजपूतों के सनातन सम्बन्ध का अत्यन्त पवित्र और ऊर्ध्वगामी उदाहरण है।

वाळे वत राखी वनै लोवड़ियाळा लाज।
सरब करौ मिल सगतियो अमर कमध ने आज।।
यूं कहती आही चारणियांह सारी चलै।
भुरजाळौ भाईह पाल धरा पर पौढीयौ।।

यहाँ चारणियों द्वारा पाबू को भाई संबोधित करवा कर इस पवित्र संबध को उद्बोधित किया है।

पिछड़ी जाति को पाबू ने उस समय छाती से लगाया था। पाबू को अपने कुटुम्ब का जितना सहयोग नहीं मिला जितना भीलों से मिला- और भीलों के प्रति अटूट श्रद्धा मरते दम तक पाबू ने जताई:- एक तरफ पाबू घावों से पड़े छटपटा रहे हैं- कुछ ही दूर उनका विश्वासपात्र भील योद्धा सांवला छटपटा रहा है सांवला का खून पाबू की ओर बह रहा है-

कहीं भील का खून पाबू के खून से मिल न जाये उस समय का दृष्य देखियेः

कूकी सह काछेलियां रुधर वहै राठौड़।
भीळों रो ळोही मिळे, देवळ वैगी दौड़।।

परन्तु पाबू भीलों का गुण कैसे भूलते। वे उनके लिए मरे- उस अवस्था में भी पाबू को अपने भील प्रिय हैं: कहते हैं:

भाळाळो भाखेह, सांभळ देवळ दे सगत।
रुधर मती राखेह, मिळवा दै भीळां मंही।।

जनहित सदियों से क्षत्रियों की परम्परा रही है। निर्माण कार्यों में क्षत्रिय किसी से पीछे नहीं रहे। असंख्य जलाशय, गौशालाएं, अनाथाश्रम, बावड़ियें, झालरे, देवालय, धर्मशालाएं और इस युग में उद्यान, शिक्षण संस्थाएँ, अस्पताल, नहरें विकास के क्षेत्र में जो कार्य देशी रजवाड़ों के समय में हुए उतने कभी भी नहीं हुए। धार्मिक सहिष्णुता के उदाहरण आपको अनेक राज्यों में मिलेंगे जहाँ मंदिर मस्जिद पास-पास बने हैं।

लूटपाट, चोरी-डकैती के मामलों में वापस धन लाकर सौंपना एक आम बात थी।

पुरोहितों, बाह्मणों एवं चारणों को जमीन व गाँव देना इन जातियों के प्रति श्रद्धा का द्योतक है। चारणों का तो

सम्मान विशेष था। वे क्षत्रियों के पथ-प्रदर्शक थे और उस ऋण से उऋण होने हेतु अनेक शासकों ने चारण कवीश्वरों को हाथी पर बिठाकर सम्मान दिया और खुद पैदल या घोड़े पर आगे जलेब में चले। इतिहास इसका साक्षी है। अकाल के समय सैकड़ों क्षत्रियों ने अपनी प्रजा के हितार्थ अपने कोठार खोल दिए व धान व घास का वितरण खुले दिल से किया।

कुचामण में प्रथा थी कि गाँव में किसी भी कन्या का विवाह होता तो ठिकाणे से वेश जाता था- क्यों? इसलिए कि गाँव की कन्या उनकी स्वयं की कन्या है। जैसलमेर में जिंझनियाली गाँव के भाटी मूलचंद संवत् 1812 के भीषण अकाल में सिंध की तरफ जाते ''मड'' को सदैव भोजन कराते थे। एक परिवार अकाल के कारण अपने बच्चों को वहीं छोड़ रात अंधेरे में चलता बना। मूलचंद जी ने उन बच्चों को अपने बच्चों की तरह पाला और जब वर्षा होने पर लोग लौटे तो उन बच्चों के भी परिजन लौटे और बच्चों को उनको सौंपा।

संक्षेप में क्षात्र धर्म की ज्योति को बचाये रखना और उसमें कर्तव्य की आहुति देकर उसे दैदिप्यमान रखना ही हम सबका दायित्व है। अंत में मैं परम आदरणीय ठा. सा. रघुवीर सिंह जी बीदासर के उद्गार अर्ज किये बिना नहीं रह सकता -

It remains to be seen Weather or nor We have enough ferment Left in us to produce any more sparkling elixir for tomorrow's Jar or we are but a rusted damascus blade the pride of any museum a yellowed parchment ripe for the archives.....

It is time to Stimulate the potential you have inherited to recruit once again into the service of the Society to which your progenitors were sworn to take up the Challenge which the change in time has thrown in your teeth and Strive for the proper and rightful place in the new world in which you have bloomed and Scatter your fragrance to the four quarters of the mother land to whose Service you are/by heritage and by birth pledged.

●

छोटे से छोटे मैं विराट का संदेश

मक्का की बात है। एक नाई किसी के बाल बना रहा था। उसी समय फकीर जुन्नैद वहाँ आ पहुँचे। उन्होंने कहा-खुदा की खातिर मेरी हजामत भी कर दे। नाई ने खुदा का नाम सुनते ही अपने गृहस्थ ग्राहक से कहा-दोस्त! अब मैं थोड़ी देर आपकी हजामत नहीं बना सकूंगा। खुदा की खातिर उस फकीर की खिदमत मुझे पहले करनी चाहिए। खुदा का नाम सबसे पहले है। इसके बाद उसने फकीर की हजामत बड़े प्रेम और श्रद्धा भक्ति से बनाई और नमस्कार करके उसे विदा कर दिया।

कुछ दिन बीत गये। एक रोज जुन्नैद को किसी ने कुछ पैसे भेंट किये तो वह उन्हें नाई को देने आये। पर नाई ने पैसे लेने से इन्कार कर दिया। उसने कहा आपको शर्म नहीं आती। आपने तो खुदा की खातिर हजामत बनाने को कहा था पैसों की खातिर नहीं। फिर तो जीवनभर फकीर जुन्नैद को वह बात याद रही और वह अपनी मंडली में कहा करते थे-'निष्काम ईश्वर भक्ति मैंने एक हज्जाम से सीखी है।'

छोटे-से-छोटे में भी विराट के संदेश छिपे हैं। जो उन्हें उघाड़ना जानता है वह ज्ञान को प्राप्त करता है जीवन में सजग होकर चलने से प्रत्येक अनुभव प्रज्ञा बन जाता है। जो मूर्च्छित बने रहते हैं वे दरवाजे पर आये आलोक को भी लौट देते हैं।

●

राजपूत

– युधिष्ठिर

शीर्षक राजपूत की जगह क्षत्रिय भी हो सकता था पर दूसरी जातियों की व्याख्या करने वाले भांड यह कहते, यह तो क्षत्रियों की बात है इसमें राजपूत कहाँ से आ गये। खैर वो चाहे कुछ भी कहे हमें बात समझ आनी चाहिए।

राजपूत तो पराजित योद्धा थे। इन्होंने कौनसा युद्ध जीता, जिसे अंग्रेजी के सुन्दर शब्दों में ये कहते हैं DE-FEAT SPECIALIST– –ये तो अपनी स्त्रियों को जलाते थे। इन्होंने सती जैसी कुप्रथा को जन्म दिया। अगर राजपूत थे तो जौहर क्यों हुआ? राजपूत तो कुर्सी के लिए लड़ता था या अपने लिए लड़ता था। दूसरी जातियों के लिए क्या किया इन्होंने? ये मिलकर कब लड़े। ये तो मुसलमानों को अपनी बहन-बेटियाँ देते थे। छोटी जातियों का इन्होंने जमकर शोषण किया, उनका मंदिर में प्रवेश करना तक वर्जित था। इन्हें अध्ययन से दूर रखा ताकि ये हमेशा गुलाम बने रहें। इनके आधे से ज्यादा पूर्वज तो गुर्जर थे। किसी को भील बताया जाता है। ये तो अफीम का नशा करते थे। स्कूलों में पढ़ाया जाता है अकबर तो महान था। प्रताप को पकड़कर मार दिया था। MUGHAL EMPIRE- के बारे में जोरों शोरों से स्कूलों में पढ़ाया जाता है। राजपूत तो राजा-महाराजाओं की संतान हैं इन्हें आरक्षण की क्या आवश्यकता है। ये तो विदेशी हैं, अंग्रेजों की संताने हैं।

ऐसे अनेक भ्रामक और झूठे तथ्य गढ़कर राजपूतों को बदनाम किया जाता है। और ऐसा कोई एक व्यक्ति कर रहा है ऐसी बात नहीं पूरी की पूरी लौबी पीछे लगी हुई हैं। जिसमें सरकार, सत्तारूढ़ पार्टी के नेता, फिल्म निर्माता-निर्देशक से लेकर झूठे इतिहासकार भी शामिल हैं। झूठा वह होता है जो सच जानने के बाद भी झूठ बोलता है। यह सब जान-बूझकर किया जा रहा है। पर ऐसा क्यों किया जा रहा है? इसमें जो पहला कारण है वह है राजपूत युवाओं को अपने ही समाज के खिलाफ खड़ा करना। आज जो राजपूतों की स्थिति है उसके पीछे तुम्हारे ही बाप-दादा हैं, ऐसी सोच राजपूत युवाओं की बन जाए ऐसा इनका मकसद है। दूसरा कारण है राजपूतों को अलग-थलग करना, सब जातियों को राजपूतों के खिलाफ खड़ा करना। तीसरा कारण है, राजपूतों को अपनी ही पहचान से वंचित करना ताकि वह अपना नैसर्गिक गुण क्षात्रधर्म का पालन करना भूल जाएं। चौथा कारण है जातिगत द्वेष। जो जाति इतने महापुरुषों की जननी है उसके स्थान पर अपना वर्चस्व कैसे हासिल करें। पाँचवा कारण है अपनी रोटी सेकना। राजपूतों के वोट कम हैं दलितों के वोट ज्यादा हैं तो एक राजपूत महापुरुष को दलित घोषित कर दो।

इससे नुकसान क्या है। कई लोग कहते हैं करने दो इससे नुकसान क्या है? पहला नुकसान है व्यक्ति की असुरक्षा। अगर ऐसा होता रहा तो हम में से कोई सुरक्षित नहीं है। अनावश्यक दंगे होंगे। बेवजह कई लोग मारे जायेंगे, कईयों के घर उजड़ जाएँगे। बिना किसी फिकर के राजनैतिक पार्टियाँ अपने स्वार्थ के लिए ऐसा कर रही हैं। अब विचार करें क्या वह आम जनता के हित के बारे में सोच रही है? दूसरा नुकसान जातियों में आपस में वैमनस्य फैल जाएगा, जिन जातियों में आपस में टकराव की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी, जिन जातियों के पुर्खे सदा एक साथ रहे, जिनमें इतना प्रेम और घनिष्ठता थी, जहाँ अच्छे सम्बन्ध थे वहाँ विवाद की स्थिति बन जाएगी। तीसरा नुकसान है राष्ट्र की असुरक्षा। जिस देश में अशांति रहे, अन्तर कलह रहे, वह देश सुरक्षित रहेगा? शत्रु इसका भरपूर फायदा उठायेंगे। तो ये राजनैतिक पार्टियाँ देश की रक्षा कवच है या विद्रोहियों से मिले हुए नरभक्षी राक्षस। खेत की बाड़ खेत की रक्षा करती है और आज बाड़ ही

खेत को खा रही है। चौथा नुकसान है इससे जातिवाद फैलेगा। जिस भारत देश में सभी धर्मो के लोग शान्ति से रहते आए हैं वहाँ जातिगत मतभेद पैदा हो जायेंगे। जातियाँ एक दूसरे को छोटा दिखाना शुरू कर देगी और ऐसा होना शुरू भी हो गया है। पाँचवा नुकसान है जो कभी भारत का इतिहास था ही नहीं, जो सच था ही नहीं, उसे लोग सच मानने लगेंगे; जो प्रेरणादायी बिल्कुल भी नहीं होगा और ऐसी प्रेरणा से राष्ट्र का नवनिमर्माण कभी नहीं हो सकता। यानी देश के विकास में भी यह बाधक है। जब नेताओं से पूछा जाता है राजपूत महापुरुष को दलित या गुर्जर क्यों घोषित करना चाहते हो तो इनका जवाब होता है राजपूतों के पास तो बहुत से महापुरुष हैं एक उधर चला भी गया तो क्या फर्क पड़ता है। इतना ही नहीं जो M.L.A. या M.P. ऐसा करता है उसे तत्कालीन सरकार इनाम के तौर पर या तो मुख्यमंत्री बना देती है या केंद्र में अच्छा पद दे देती है। राजपूतों को टिकट भी कम दिए जाते हैं और जो राजपूत विजेता होते हैं उन्हें मंत्रिमंडल में शामिल भी नहीं किया जाता। राजपूतों पर यह भी लांछन लगाया जाता है कि स्वतंत्रता संग्राम में राजपूतों का कोई योगदान नहीं था। इन सारी बातों का खुलासा होना चाहिए और सच सामने आना चाहिए। कोई क्या करता है इसका फर्क नहीं पड़ता। जिसका भोजन गोबर है उसके स्वादिष्ट व्यंजन नहीं पचते। पर एक राजपूत को सच पता होना चाहिए क्योंकि उसका जीवन उसके लिए नहीं होता। ये राजपूतों को कायर और डरपोक कहते हैं और यह भी कहते हैं कि राजपूत नारियाँ कमजोर थी इसलिए जौहर करती थी।

किसी देश, प्रान्त अथवा जाति का गौरव उसके इतिहास में छिपा रहता है। राजस्थान का चप्पा-चप्पा पुण्य भूमि है। अनादिकाल से विश्व के शासक राजपूत रहे हैं। एक सहस्त्र वर्ष इस्लामी आक्रमणों से हुये टकराव में राजपूतों के त्याग, उदारता, साहस और वीरता इतिहास में गुंजायमान है। अगर राजपूत हमेशा पराजित रहे कभी विजयी हुए ही नहीं तो विजय स्तम्भ किसकी निशानी है। राणा कुंभा ने विजय स्तम्भ क्यों बनवाया। अगर राजपूत वीर नहीं हैं तो धनजी ने अपने सिर से मेहरानगढ़ किले का दरवाजा कैसे उछाल दिया। अगर राजपूत वीर नहीं हैं तो हाथी से टक्कर दिलाकर छाती से बल्लू जी शक्तावत ने किले का दरवाजा कैसे तुड़वा दिया। अगर राजपूत वीर नहीं है तो जैतसिंह चुण्डावत ने अपनी गर्दन काटकर ऊँटाला किले में कैसे फैंक दी। अगर राजपूत वीर नहीं है तो जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह जी के पुत्र पृथ्वीसिंह ने औरंगजेब के भूखे शेर को कैसे दो हिस्सों में चीर दिया। अगर राजपूत दलितों पर अत्याचार करते थे तो पाबूजी राठौड़ के साथ भील क्यों रहते थे। अगर राजपूत वीर नहीं थे तो दुर्गादास राठौड़ औरंगजेब की दाढ़ों में से अजीतसिंह जी को सुरक्षित कैसे लेकर आ गये। अगर राजपूत दलितों को मंदिर में प्रवेश नहीं करने देते थे तो रुणीचे के बाबा रामदेव ने दलितों को मंदिरों में प्रवेश कैसे दे दिया। अगर सती एक कुप्रथा है तो बाला सतीजी रूप कंवर जी को विश्वभर में क्यों पूजा जाता है। अगर राजपूत कायर थे तो बीकानेर के महाराजा कर्णसिंह ने औरंगजेब जो पूरे भारत को इस्लाम बनाना चाहता था उसकी योजना कैसे विफल कर दी? कैसे दस हजार हिन्दू राजाओं को मुसलमान होने से बचा लिया? अगर मुसलमानों ने आठ सौ वर्षों तक भारत पर शासन किया तो आज भारत में ८0% प्रतिशत तक हिंदू क्यों हैं। अगर राजपूत अपनी बहन-बेटियों को मुगलों को दे देते थे तो जौहर की क्या आवश्यकता थी। जौहर होता ही नहीं। अपने सतीत्व की रक्षा के लिए, अपने स्वाभिमान के लिए, स्वाभिमान यह कि कोई विधर्मी मेरी मृत देह को भी नहीं छू सके। रक्त की पवित्रता के लिए, अपने पुरुष की लाज के लिए, हंसते-हंसते अपनी पवित्र देह को अग्नि में भेंट चढ़ा दिया। अपने निष्पाप, निर्दोष, मासूम बच्चों को अग्नि के भेंट चढ़ा दिया, ऐसी सती योगिनियों के गर्भ से ही महाराणा प्रताप जैसी वीर संतानें पैदा होती हैं।

दूसरी जातियों ने खाया-पिया और वंशवृद्धि का भी काम किया। एक समय ऐसा आया जब राजपूत के घर में 18 वर्ष के बच्चे से बड़ा कोई नहीं था। घर में विधवाओं का अंबार लग गया। हर घर में रोज दाह-संस्कार होता था। एक घर में बच्चा जन्मता था तो दूसरे घर में किसी बड़े का अंतिम संस्कार किया जाता था। जो विदेशी थे जिनका इस देश से कोई संबंध नहीं, जो लुटेरे थे उनका इतिहास स्कूलों में पढ़ाया जाता है। जो यहाँ पैदा हुए उनके इतिहास को दबा दिया गया। अकबर दि ग्रेट पढ़ाया जाता है, जिसका सच्चा इतिहास लोगों के सामने आया ही नहीं। जिन्होंने चित्तौड़ जीतने के बाद 30,000 निर्दोष औरतों और मासूम बच्चों का कत्लेआम करवाया क्या ये महानता थी उसकी। जो औरतों के कपड़े पहनकर नौरोज के मेले में घूमता था क्या यह महानता है उसकी, जो तीन सौ से अधिक औरतों का हरम छोड़ गया यह महानता है उसकी। जहाँ ईरान, इराक, सीरिया, मिश्र, दमिश, अफगानिस्तान, कतर, बलूचिस्तान, मंगोलिया, रूस तक ध्वस्त होते चले गए, वहाँ उनके पाँव भारत में आकर क्यों रूक गए? क्योंकि यहाँ राजपूत चट्टान बनकर खड़े थे। पुर्जा-पुर्जा कट मरे पर हिंदुस्तान को मुस्लिमस्थान नहीं बनने दिया। आज भी हिन्दुओं की जनसंख्या भारत में 80% प्रतिशत है। वर्ण व्यवस्था का भी पूरा खयाल रखा। जो जैसा काम कर रहे थे वैसा काम उन्हें करने दिया। उनके जीवनचर्या में कोई समस्या नहीं आने दी। आज खुलेआम टी.वी. में दिखाया जाता है कि पहले ऐसे दलितों पर अत्याचार होता था जो सच है ही नहीं। सरकार भी ऐसे सीरियलों को खुला समर्थन देती है। कई ऐसी फिल्में बन गई जहाँ ठाकुरों को अत्याचारी बताया जाता है। ऐसा कुछ था ही नहीं। ये सच नहीं है। जो ढोली होते हैं, जिनका काम ब्याह शादी में गाना बजाना होता है उन्हें बड़ा अच्छा संबोधन करके पुकारा जाता था, आज भी पुकारा जाता है ढोलनजी, ढोलीजी। और इनके पुत्र वधुओं और राजपूतों के पुत्र वधुओं में अच्छे संबंध थे, एक दूसरे को भाभी-भाभी कहकर पुकारते थे। इनके बच्चे और राजपूतों के बच्चे एक साथ खेला करते थे। ब्याह, सगाई-संबंध में इन्हें अच्छे कपड़े दिए जाते थे। इनके भरण-पोषण का दायित्व पूरा राजपूतों पर ही था। सवेरे-सवेरे ये छाछ के लिए राजपूतों के घर पहुँच जाया करते थे। इनके साथ कभी दुर्व्यवहार हुआ भी नहीं। लेकिन एक साजिश के तहत लोगों में जहर घोला जा रहा है। दूसरी जातियों को कुछ पता नहीं और ये राजनेता पूर्वजों के नाम पर जातियों को आपस में लड़ा रहे हैं। राजपूतों की कम संख्या है, इतने वोट है नहीं इसलिए ये राजपूतों की खिलाफत कर रहे हैं। जिन दलितों को शोषित वर्ग कहा जाता है उनका नाश्ता व दोनों वक्त का खाना राजपूत के घर से जाया करता था। जिन जातियों का भरण-पोषण राजपूतों ने किया उन राजपूतों को हर संभव प्रयास करके शोषण करने वाला घोषित किया जा रहा है। वही शोषित वर्ग आज बहुत बड़ी आबादी लेकर बैठा है, राजपूत इतने कम कैसे हो गए। कट-कटकर मर गए। जिन राजपूतों को इंसानों का शोषण करने वाला बताया जाता है वह तो जानवरों के लिए भी मिट गए। कहीं आमेर के मानसिंह कच्छवाह तो कहीं राजा जयचंद को देशद्रोही बताते हैं। कहीं पन्नाधाय को गुर्जर बताते हैं। जिन्होंने ढाल बनकर हिंदू समाज की रक्षा की उन्हें हिन्दू समाज का बेनिफिसियरी नहीं माना जाता है। राजपूत का तो कलेजा ऐसा है या तो आर या पार। राजपूत की उपस्थिति से यह विश्वास होता है, सामने वाला तो गया। बोटी- बोटी नोंच-कर खाने वाले राजपूत के सामने शत्रु क्या करेगा। अगर कोई सुरक्षित है तो राजपूत के संरक्षण में ही सुरक्षित है। दिल में राजपूतों के तूफान रहता है, पर तूफान जब सामने आएगा शत्रु के क्या हाल होंगे। जो प्रण पे प्राण दे दे, क्या इतनी सस्ती है मौत? दलितों को गेंहू, बाजरा, तेल, धान अलग से दिया जाता था। दलित राजपूतों के घर बैठकर ही भोजन करते थे। उन्हें भोजन किए बगैर जाने भी नहीं दिया जाता था। फिर वो भोजन अपने साथ

(शेष पृष्ठ 22 पर)

परिश्रम से श्रेष्ठता की प्राप्ति

– स्वामी जगदात्मानन्द

परिश्रम से श्रेष्ठता की प्राप्ति :

मैं एक ऐसे युवक को जानता हूँ, जो प्रतिदिन आठ घण्टे से भी अधिक परिश्रम करता था और सारे दिन के परिश्रम के बाद प्रसन्नचित्त से घर लौटता था। परिश्रम के कारण उसकी प्रसन्नता में कभी ह्रास आते नहीं देखा गया। वह अपने कार्यालय से 3 कि.मी. दूर स्थित गाँव के एक छोटे-से घर में रहता था। उसके पास जीवन की आधुनिक सुविधाएँ नहीं थीं; कार्य के बाद वह पैदल ही घर लौटता था। वह प्रतिदिन एक-दो घण्टे अध्ययन करता था। कॉलेज में प्रवेश से वंचित रह जाने के कारण उसने प्राइवेट परीक्षा पास करके विश्वविद्यालय की डिग्री प्राप्त की। उसके कार्यालय के अधिकारियों या सहकर्मियों में से किसी को भी उसकी आलोचना या उस पर क्रोध करने का अवसर नहीं मिलता था। सभी उस पर विश्वास करते थे तथा उसे आदर की दृष्टि से देखते थे। 'विद्या ददाति विनयम्' – 'ज्ञान से विनम्रता आती है' यह उक्ति उस पर पूर्ण रूप से चरितार्थ होती थी। अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए वह किसी के सामने झुका नहीं। अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए उसने किसी अनुचित मार्ग का आश्रय नहीं लिया। वह शुद्ध हृदय का था। अपनी कर्म-कुशलता, समयबद्धता, धैर्य तथा कार्य में अनन्त उत्साह के गुणों के फलस्वरूप वह एक अत्यन्त सम्मानित संगठन में बहुत ऊँचे पद पर पहुँचा। अपने अधीनस्थ कर्मियों के प्रति उसका व्यवहार उदारता एवं सहयोगपूर्ण था, परन्तु साथ ही वह इतना कठोर भी था कि कोई उसकी सज्जनता का गलत लाभ न उठा सके। वह न्याय के लिए लड़ता था और दुष्ट शक्तियों के सामने नहीं झुका । आज वह तीन बच्चों का पिता है, आत्मसंयमी है और किसी व्यसन में नहीं पड़ा। अपने अनेक मानव-बन्धुओं को राहत पहुँचाने से सन्तुष्ट चित्तवाले इस अथक ऊर्जावान व्यक्ति के चेहरे पर मैंने आन्तरिक शान्ति की आभा देखी। उससे भेंट होने पर मैंने पूछा, 'जीवन में तुम्हारी सफलता का क्या सिद्धान्त रहा? तुम्हारे कार्य की क्या विशेषता थी? तुमने जीवन की समस्याओं का कैसे सामना किया?'

उसने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि मुझमें कोई विशेष गुण है। शायद यह सब ईश्वर की कृपा से हुआ। पर इतना मैं जरूर कह सकता हूँ कि मेरे माता-पिता ने मुझे प्रत्येक कार्य को पूरी निष्ठा तथा सच्चाई के साथ करने को कहा था। बचपन से ही मुझे जिम्मेदारियाँ उठानी पड़ी थीं। यदि मैं अपने उत्तरदायित्व ठीक-ठीक नहीं निभाता, तो सभी मुझे बुरा-भला कहते। यद्यपि मार्ग में प्रलोभन तथा आकर्षण भी आए, परन्तु निन्दा तथा अपमान के भय से मैं बच गया। फिर एक वृद्ध भी मुझसे बार-बार कहते, यदि तुम अपना कार्य ठीक से करना सीख लो, तो तुम्हें किसी से डरने की जरूरत नहीं। जब मैंने कुछ लोगों को कहते सुना कि लड़का अच्छा काम करता है, तो इससे मुझे अप्रत्यक्ष रूप से प्रोत्साहन भी मिला। तब से मुझे विश्वास हो गया कि जो व्यक्ति अपना कार्य निष्ठा व लगन से करता है, उसके भीतर आत्मविश्वास की प्रचण्ड शक्ति आ जाती है और उसके व्यक्तित्व का विकास होने लगता है। उसे दूसरों का मार्गदर्शन तथा सहायता करने के मौके मिलते हैं। अपने मनोबल के कारण वह असफलता से निराश नहीं होता। अतः उसके लिए सहज ही उच्च पदों के द्वार खुल जाते हैं। छोटी-सी उन्नति या उपलब्धि भी उसे आगे बढ़ाती है। यदि गर्व, अहंकार और धृष्टता उसे नीचे नहीं गिराते, तो कभी-न-कभी उसे संगियों, अधिकारियों तथा

जनता से सम्मान मिलता ही है। वे खुले आम इसे भले ही व्यक्त न करें, परन्तु अपने व्यवहार से तो जता ही देते हैं। इससे दिन-पर-दिन हमारी कार्यकुशलता बढ़ती जाती है।'

मैंने पूछा, 'सुना है कि परिश्रमी लोगों पर ही काम का बोझ लादा जाता है!'

उसने उत्तर दिया, 'यह ठीक है कि यदा-कदा ऊपरवाले अतिरिक्त कार्य थोप देते हैं, परन्तु आरम्भ में इस थोड़ी-सी असुविधा को सहने के लिए तैयार रहना पड़ता है। कभी-कभी लग सकता है कि हमें दबाया जा रहा है, पर यदि हम धैर्य रखें तथा इसे अपनी अध्यवसाय एवं सहनशीलता के लिए चुनौती समझें, तो मुझे लगता है कि हमें सफलता ही मिलेगी।'

'इस दौरान मैंने कर्म के एक दर्शन का विकास किया है। कर्म केवल जीवन-निर्वाह का उपाय नहीं, बल्कि हृदय के विशुद्ध आनन्द की अभिव्यक्ति में आनेवाली बाधाओं को दूर करने का एक साधन है। हमारा चाहे जो भी पेशा हो, यदि हम पूरी एकाग्रता के साथ अपना कार्य सम्पन्न करें, तो वह हमें सन्तोष तथा आनन्द प्रदान करता है। वेतनमान में वृद्धि ही कार्य के उच्च स्तर तथा उसमें सफलता को प्रोत्साहित करने का एकमात्र उपाय नहीं है। कर्म के प्रति एक उच्च दृष्टिकोण तथा उसके सम्पादन में निपुणता ही उसके स्तर में सुधार लाते हैं। जब हमें बोध होगा कि पूर्ण एकाग्रता के साथ किए गए कर्म के फलस्वरूप सच्चा सुख मिलता है, तब हम छोटे- से-छोटे कार्य की भी अवहेलना नहीं करेंगे, बल्कि उन्हें निष्ठा और ईमानदारी के साथ पूरा करेंगे।'

मैंने पूछा, 'क्या यह दर्शन नीरस तथा उबाऊ कार्य पर भी लागू होता है? रचनात्मक कार्यों से तो आनन्द एवं प्रेरणा मिलती ही है, परन्तु यंत्रवत कार्य से भी क्या इनकी प्राप्ति सम्भव है?' उसने उत्तर दिया, 'मुझे नहीं लगता कि कोई ऐसा भी कार्य है, जो पूर्णतः रचनात्मक तथा उबाऊपन से मुक्त हो। प्रत्येक प्रतिभाशाली व्यक्ति के रचनात्मक कार्य, उसकी हर कलाकृति के पीछे, कुछ-न-कुछ प्रयास तथा किसी-न-किसी प्रकार का संघर्ष विद्यमान रहता है। यह सर्वविदित है कि यदि हम कोई आवश्यक कार्य ठीक से नहीं कर पाते, तो हमें असन्तोष होता है। सफल न होने का दुःख मन को विषण्ण कर देता है। कार्य चाहे जितना भी उबाऊ क्यों न हो, जब हम उसे ठीक से सम्पन्न कर लेते हैं, तब हमें शान्ति, सन्तोष तथा विश्रान्ति की अनुभूति होती है। यही सबका अनुभव है।'

पाठक, क्या तुमने अपने कार्य भलीभाँति करने की आदत डाली है? यही आदत तुम्हारे बल एवं उत्साह में वृद्धि करेगी। कार्य में उत्कृष्टता आने पर तुम्हारे पूरे व्यक्तित्व का विकास होगा।

जग बन्धन की खान है - जग मुक्ति की नाव।
दोनों रस्ते सामने - ठीक लगे वहाँ जाव।
ठीक लगे वहाँ जाव - सोच ले मरजी तेरी।
एक है हरदम की जोत - दूसरी रात अँधेरी।
लख चौरासी काट के - मौका मिलिया आज।
कह गरीबां चूक मत - धर ले सिर पे ताज।

मनोबल का साक्षी दिवेर का युद्ध

– डॉ. मातुसिंह मानपुरा

यह कटु सत्य है कि हल्दीघाटी में 18 जून, सन् 1576 के दिन अपने मनसूबों पर पानी फिरने के उपरान्त अकबर की नींद उड़ गयी थी। तोपों से सुसज्जित व्यूह रचना एवं अनुभवी सेनापति तथा जहरीली धार्मिक कट्टरता से प्रशिक्षित सेना के उपरान्त भी मुगल बादशाह स्वाभिमानी राणा को ऐसी क्षति नहीं पहुँचा सका जिसकी पूर्ति नहीं की जा सके। लगभग सम्पूर्ण भारत का सम्राट अहंकार से परिपूर्ण अकबर महाराणा को समाप्त करना या बन्दी के रूप में अपने सामने देखना चाहता था लेकिन वह अपने उद्देश्य को पूर्ण नहीं कर सका। मुगल सेना की तैयारी और उद्देश्य की समीक्षा की जाये तो हल्दीघाटी युद्ध में महाराणा की विजय हुयी जिसका कुटिलतापूर्ण प्रत्यक्ष प्रमाण 'इकबालनामा-ए-जहांगीरी' का लेखक मौतमिद खां लिखता है– 'कुंवर मानसिंह, जो इस दरबार का तैयार किया हुआ खास बहादुर आदमी है और जो फर्जन्द (बेटा) के खिताब से नवाजा जा चुका है, अजमेर से कई मुसलमान और हिन्दू सरदारों के साथ राणा को पराजित करने के लिए भेजा गया। इसको भेजने में बादशाह का यही मकसद था कि वह राणा की ही जाति का है और उसके बाप-दादे हमारे अधीन होने से पहले राणा के अधीन और खिराजगुजार रहे हैं, इसको भेजने से सम्भव है कि राणा इसे अपने सामने तुच्छ और अपना गुलाम समझकर लज्जा और अपनी प्रतिष्ठा के ख्याल से लड़ाई में सामने आ जाए और युद्ध में मारा जाए।' स्मरण रहे हल्दीघाटी युद्ध से पूर्व 25 फरवरी, सन् 1568 के चित्तौड़ दुर्ग पर जनसंहार करने वाले आक्रांता ने विवश होकर प्रताप से ससम्मान संधि करने हेतु चार बार प्रयास किया।

1. अक्टूबर, सन् 1572 में जलालखां कोरची के सहयोग से। 2. जून, सन् 1573 में आमेर के कुंवर मानसिंह के सहयोग से। 3. सितम्बर, सन् 1573 में आमेर के राजा भगवन्तदास के सहयोग से। 4. अक्टूबर, सन् 1573 में राजा टोडरमल के सहयोग से।

प्रयास किया, लेकिन स्वाभिमानी राणा ने इन सब लालच एवं दवाब के प्रस्तावों को ठुकरा दिया। हल्दीघाटी युद्ध के बाद उच्च मनोबल का साक्षी दिवेर का युद्ध बना जिसमें महाराणा ने शानदार सफलता प्राप्त की।

'जो दृढ राखे धर्म को, ताहि राखे करतार'।

हल्दीघाटी की प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सफलता ने मेवाड़ के राणा एवं सेना का मनोबल बढ़ा दिया था। मुगलों के अधिकार से अपने कई महत्त्वपूर्ण ठिकानों पर पुनः कब्जा कर लिया तथा मेवाड़ की सेना ने अनुभव व धन प्राप्त कर सुदृढता प्राप्त की। मुगल सेना एवं सेनापति महाराणा से मैदानी युद्ध करने में भयभीत होने लगे इसलिए मेवाड़ की सामरिक तैयारी को क्षति पहुँचाने हेतु सम्पर्क मार्गों पर अपने थाने स्थापित करने की नीति को अंजाम दिया। देबारी, देसूरी एवं दिवेर जैसे महत्त्वपूर्ण स्थानों पर मुगलों ने अपनी मोर्चाबंदी मजबूत कर सेना को तैनात किया। इनमें से मुगलों का सबसे मजबूत मोर्चा दिवेर में था जहाँ अकबर का विश्वसनीय चाचा सुलतान खान एवं अनुभवी बहलोल खां तैनात थे। महाराणा ने मनकियावास के जंगलों में मुगलों के सबसे सुदृढ मोर्चे दिवेर पर आक्रमण करने की योजना तैयार की क्योंकि आक्रमणकारियों का यह सैनिक दस्ता मेवाड़ के आंतरिक ठिकानों पर आक्रमण कर सकता था। मातृभूमि के रक्षक अनुभवी महाराणा ने अपनी सेना को दो भागों में विभाजित किया। एक भाग का नेतृत्व स्वयं महाराणा ने तथा दूसरे भाग का नेतृत्व राजकुमार अमरसिंह को सौंपा गया। सन् 1582 में दशहरा पूजन के पश्चात् महाराणा की सेना ने दिवेर-छापली नामक स्थान

पर मोर्चा लिये मुगल सेना पर आक्रमण कर दिया। पूर्ण मनोबल एवं उत्साहित मेवाड़ी सेना के आगे तीन गुना एवं बड़ी मुगल सेना के पैर उखड़ने लगे। वीर पिता के वीर पुत्र कुंवर अमर सिंह ने अकबर के चाचा सुलतान खांन को भाले के प्रहार से मार गिराया। महाराणा ने आगे बढकर बहलोल खांन पर प्रहार कर उसे घोड़े सहित चीर दिया, तब से मेवाड़ में यह कहावत बन गयी कि 'दुश्मन को हम घोड़े सहित काट दिया करते हैं।' उत्साहित मेवाड़ी सेना से घबराये हुए मुगल सैनिक अपनी जान बचाने के लिये भागने लगे। इस युद्ध के बाद महाराणा ने उदयपुर सहित महत्त्वपूर्ण स्थानों को अपने अधिकार में लिया। इस युद्ध में युवराज अमर सिंह ने अपनी वीरता का विशेष प्रदर्शन किया था इसलिये कुछ इतिहासकारों ने इस युद्ध को 'अमरसिंह के राज्यकाल में होना' लिखने की भूल की है। महाराणा प्रताप और मुगल सेना के मध्य यह आखिरी युद्ध था जिसे विदेशी इतिहासकारों ने 'मेवाड़ का मेराथन' कहा है। महाराणा के जीवनकाल में मुगलों ने मेवाड़ पर आक्रमण करने का साहस नहीं किया। ऐतिहासिक तथ्य प्रमाणित करते हैं कि महाराणा ने अपने राज्यकाल में मुगल सेना को 36 युद्धों में परास्त किया था। मुगल बादशाह अकबर अपने जीवनकाल में महाराणा प्रताप एवं अमर सिंह को अपने अधीन नहीं कर सका।

हम सब जानते हैं कि सन् 1947 के बाद केन्द्र सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय के कर्त्ताधर्त्ताओं ने विदेशी आक्रमणकारियों की क्रूर संतानों को भी महान बनाने के लिए उनके चाटूकार दरबारी लेखकों के कुटिल साहित्य का उपयोग किया तथा विद्यालय पाठ्यपुस्तकों में आर्यवृत के विभिन्न क्षेत्रों में सुदृढ राज्य के शासकों के मात्र पराजित युद्धों का वर्णन कर भारतीय युवा पीढ़ी को हतोत्साहित करने का प्रयास किया। स्मरण रहे! दिल्ली-आगरा के शासकों का मनगढंत वृतांत लिखना ही इतिहास नहीं है। सनातन विरोधी शक्तियों को अफगानिस्तान, इरान तथा हिमालय के पार तक खदेड़ने एवं भयभीत कर भारतीय जनसामान्य को सुरक्षा प्रदान करने वाले शासकों का शोधपूर्ण तथ्यों पर आधारित इतिहास लिखने की आवश्यकता है। अंग्रेज सत्ता से संघर्ष कर एवं देशी शासकों की त्यागमय भावना से एकीकृत तथा सेना में प्राण न्यौछावर करने के परिणामस्वरूप प्राप्त स्वतन्त्र भारत में वास्तविक इतिहास को विकृत करने का प्रयास क्रूरतापूर्ण विदेशी आक्रमण से कम नहीं है। स्वाभिमान एवं स्वतन्त्रता के पुजारी, राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक इस युगपुरुष का देहान्त मात्र 57 वर्ष की अवस्था में जनवरी, सन् 1597 को चावंड गाँव में धनुष की डोर खेंचते समय संघातिक चोट लगने से हुआ। हल्दीघाटी का साहसी संघर्षकर्ता एवं दिवेर युद्ध के शानदार विजेता को कोटि-कोटि प्रणाम । मेवाड़ महाराणाओं की प्रतिष्ठा में कविराज द्वारा रचित इतिहास प्रसिद्ध सोरठा प्रेरणादायक है -

पग-पग भम्या पहाड़, धरा छोड़ राख्यो धरम।
महाराणा मेवाड़, हिरदै बसिया हिंद रै।।

●

पृष्ठ 18 का शेष : राजपूत

भी लेकर जाते थे, जिसमें ढोली, मेघवाल, रैगर आदि बहुत-सी जातियाँ थी। यह इनकी प्रतिदिन की दिनचर्या थी। जिनका सूर्योदय और अस्त राजपूत के घर होता था उन राजपूतों ने दलितों का शोषण किया? समय-समय पर इनको खर्चा निकालने के लिए पैसा भी दिया जाता था। मेहमानों की तरह इनमें सही समय पर चाय भी पिलाई जाती थी। इनके साथ कभी भेदभाव नहीं हुआ, जो खाना राजपूत खाते थे या उनके परिवार के सदस्य खाते थे वही खाना इनको खिलाते थे। ऐसा नहीं की इनके लिए कोई अलग से खाना बनता था। अपने वंश की तरह पनपाने वाली राजपूत कौम को ये अपना शोषण करने वाला कहते हैं। **(क्रमशः)**

मातृशक्ति का दायित्व

– पुष्पेन्द्रसिंह विश्वकर्मानगर

क्षत्रिय कुल परम्परा में नारी शक्ति का विशेष गौरव रहा है। मातृशक्ति ने प्रारम्भ से ही क्षत्रियों को कर्तव्य पालन के लिए प्रेरित किया है। उस समय का स्मरण करते हुए हमें गर्व होता है जब रानी पद्मिनी ने स्वाभिमान की रक्षा के लिए जौहर को अपनाया था, अपने शरीर को म्लेच्छों से पवित्र रखने के लिए अग्नि स्नान को स्वीकार किया था। हाड़ी रानी सलेह कंवर जी ने मेवाड़ की रक्षा के लिए अपने पति चुंडावत रावत रत्नसिंह जी को स्त्री मोह के बंधन से मुक्त करवाने के लिए अपना सिर काट कर दे दिया। धाय माता खींची (चौहान) वंशीय पन्नाधाय ने राजकुंवर उदयसिंह की रक्षार्थ अपने सर्वस्व, पुत्र चंदन की बलि देकर त्याग और बलिदान की क्षत्रिय रीति से परिचय कराया। मारवाड़ के महाराजा जसवंत सिंह (प्रथम) की रानी हाडी जसवंत दे को जब सूचना मिली कि महाराजा युद्ध हारकर आ रहे हैं तो उन्होंने किले के दरवाजे बंद करवा दिए और महाराजा का मुंह भी नहीं देखना चाहा। ऐसी अनेक क्षत्राणियाँ हर घर में होती थी जो अपने पति और पुत्र को तिलक लगाकर युद्ध विजय के लिए भेजती थी। हमारे रक्त से सींचे हुए इतिहास का स्मरण करते हुए हमें गर्व होता है लेकिन अफसोस इस बात का है कि क्या हम केवल हमारे इतिहास पर ही गर्व करते रहेंगे, नया इतिहास कब लिखेंगे? इसके लिए हमें समाज जागरण में महिला सशक्तिकरण की ओर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है, उनको क्षत्राणी की वास्तविक शक्ति का बोध कराने की आवश्यकता है। कुछ लोगों के विचार हैं कि हमें महिलाओं से राजनीति नहीं करवानी है इसलिए हम उन्हें क्षत्रियत्व का पाठ क्यों पढ़ाएँ? जरूरी नहीं है कि महिला सशक्तिकरण केवल राजनीति के लिए ही किया जाता है बल्कि समाज में संस्कार निर्माण, संस्कृति संरक्षण के साथ-साथ आर्थिक ढांचा भी मजबूत बनाती हैं। समाज में कुरीतियों को खत्म करने के साथ ही नशे से भी युवाओं को दूर रहने के लिए प्रेरित करेगी। बच्चों में संस्कारों का निर्माण उसकी माता ही कर सकती है, उसमें अनुशासन, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठा, स्वाभिमान, आत्मसम्मान, उच्च कर्म, नारी सम्मान जैसे मर्यादित गुणों का निर्माण स्त्री ही कर सकती है। हमारे पहनावे, हमारी बोली और रहन-सहन की संस्कृति की पहचान हमें विरासत में मिली है, उसे सुरक्षित रखने में मातृशक्ति का योगदान सर्वश्रेष्ठ होगा। पाश्चात्य संस्कृति की देखा-देखी करके उसके अनुसार पहनावा और भाषा का प्रयोग होने लगा है जो हमारी संस्कृति के साथ खिलवाड़ है। समाज की बहनें फटे, कटे और छोटे कपड़ों को पहनना अपनी शान समझ रही हैं, उनको रानी पद्मिनी के चरित्र का बोध कराना होगा जिन्होंने हँसते-हँसते जौहर स्वीकार किया। हमारी मधुर भाषा जिसको सुनने के बाद हर कोई उसका कायल हो जाता है उसे हम भूल रहे हैं। इसके संरक्षण के लिए हमारी माता बहनों को अच्छी संगत का वातावरण प्रदान करने की आवश्यकता है। समाज के युवा नशे की गिरफ्त में धीरे-धीरे फंसते जा रहे हैं, उन्हें शराब, अफीम, गांजा, सट्टाबाजी आदि कई प्रकार के नशे का शौक शनैः शनैः अपनी चपेट में लेकर उन्हें बर्बाद कर रहा है। उन्हें ज्ञात ही नहीं होता है कि कब वे नशे के आदी हो गए। युवाओं को नशे की लत से दूर रखने के लिए भी यदि उस घर की स्त्री में क्षत्रिय कुल की उन वीरांगनाओं के गुण जागृत हैं तो वह हमारी भोली कौम को धीरे-धीरे नशे से मुक्त कर देगी। समाज में दहेज प्रथा, टीका प्रथा, सोने की असीमित खरीद, मृत्यु भोज, जैसी अनेकों ऐसी

(शेष पृष्ठ 27 पर)

अहं भाग्यशाली क्षत्रियगोत्रे जातः!!!

– लक्ष्मी कंवर बड़ोड़ागाँव

हमे गर्व है कि हम उस कुल के वंशज हैं जिसके पूर्वजों का रक्त सदैव देश और धर्म के लिए बहा है। यह ईश्वर की बड़ी अनुकम्पा है कि मुझे क्षत्रिय कुल में जन्म मिलने के साथ श्री क्षत्रिय युवक संघ का सानिध्य भी प्राप्त हुआ।

हमे बहका न कोई लाया है, आए हैं हम।
तेरी बगिया में नया पाया जन्म।।

श्री क्षत्रिय युवक संघ रूपी बगिया में नव जीवन पाकर श्री देगराय एवं सती मोती कंवर बालिका शाखा की बालिकाएं शाखा भ्रमण पर जा रही है।

पूज्य श्री की इच्छा, माँ भगवती की असीम कृपा और प्रांत प्रमुख शिक्षक सर के मार्गदर्शन से शैक्षिक एवं ऐतिहासिक भ्रमण का यह अवसर सुगम हुआ।

सर्वप्रथम बडोड़ा गाँव से हम राजश्री दयालदास जी के स्मारक स्थल पर पहुँचे। यह स्मारक बासनपीर की सरहद पर स्थित है, जो उनके बलिदान का स्मरण करवाता है। पूज्य श्री तनसिंह जी जयंती वर्ष पर हुए कार्यक्रमों में यहाँ पर भी एक भव्य कार्यक्रम हुआ था। इस ऐतिहासिक व पवित्र स्थल को शाखा भ्रमण के तहत अधिकांश बहनों को पहली बार देखने का सौभाग्य मिला। इतिहासविद शिक्षक श्री ने बताया कि आपके बलिदान से आज तक जैसलमेर राजगद्दी पर आपकी पीढ़ी की ही हुकुमत रही है। शाखा भ्रमण के दूसरे पड़ाव 'वार म्युजिअम' देखने से हमारा स्वाभाविक गुण शौर्य जागृत हुआ। अपने रक्त की तासीर के अनुरूप बहनों के उद्गार– हमें भी भारतीय सेना में जाकर राष्ट्र की सेवा करनी है। शाखा भ्रमण ने अंगारों रूपी तासीर पर आई हुई राख हटाने का अवसर उपलब्ध कराया। आगे तनाश्रम अपनत्व लुटाने को आतुर है, नीरव व शान्त वातावरण, बड़े भाईयों द्वारा तैयार किया हुआ शुद्ध एवं सात्विक भोजन। अपनत्व ऐसा कि जैसे स्वयं के घर पर आए हैं और यहीं बैठे रहें। परन्तु तय कार्यक्रम के तहत अगले भ्रमण स्थल के लिए कठोर मन से तनाश्रम से विदाई ली। तत्पश्चात 'जैसलमेर दुर्ग' में प्रवेश करते हुए हमने देखा असंख्य आक्रमणों को झेलने वाला सोनार अब भी भाटी राजपूतों के 'उत्तर भड़ किंवाड़ भाटी' के विड़द की गवाही दे रहा है।

''मिलेंगे बिखरे हुओं के निशां कहीं न कहीं''

दुर्ग में प्रवेश करते ही मन मस्तिष्क ने श्रद्धानवत होकर उस रजकण को वंदन किया, जिसकी गोद में कुल के वीरों और वीरांगनाओं ने शाके एवं जौहर किए। इतिहासविद शिक्षक श्री ने हमें बताया कि ढ़ाई शाको के गौरव को लिए इस दुर्ग में कुल की माताओं ने अपनी कंचन जैसी देह को अग्नि के दाह में समर्पित कर भाटी वंश के मान को अक्षुण्ण रखा। मूलराज व रतनसी, दूदा व तिलोकसी, लूणकरण का शौर्य, त्याग, वचनबद्धता और स्वाभिमान की प्रतिध्वनि अब भी गूंज रही थी। हमने दुर्ग को प्रणाम किया, हे गौरवशाली दुर्ग! हमें भी पूर्वजों की भाँति कर्तव्यपालन की प्रेरणा दो। अपना आशीर्वाद दो ताकि हमारा जीवन भी सार्थक हो सके। आगे बढ़े कुलधरा की ओर, यहाँ पर हमें राजस्थान की प्राचीन संस्कृति की झलक देखने को मिली। यहाँ की शिल्पकला एवं निर्माण शैली काफ़ी अनोखी थी।

तत्पश्चात् हम 'नभडूंगर राय' पहुँचे। ऊंची चोटी पर स्थित यह मंदिर अपने आप में पूर्णता दर्शा रहा था। यहाँ का वातावरण काफी अध्यात्ममयी और भक्तिभावना से ओतप्रोत है। यह मंदिर जैसलमेर के प्रमुख शक्ति पीठों में से एक है। शिक्षक श्री ने मंदिर परिसर में बाला सती रूप कंवर जी का परिचय प्रस्तुत किया, जो बहुत ही प्रेरक लगा। संजोग से उस दिन 15 नवम्बर था, जो कि उनकी

(शेष पृष्ठ 27 पर)

संघशक्ति

अपनेपन की सीख

– एक स्वयंसेवक

प्राचीन समय की बात है कि एक धारा नामक नगरी थी। जिसमें वात्सल्य नाम का राजा था। जिसका स्वभाव बड़ा ही दयालु और प्रजावत्सल था। एक बार की बात है, नगर में एक महात्मा पधारे। वात्सल्य मिलने पहुँचे। राजा की ख्याति एवं व्यवहार को देखकर महात्मा उससे बहुत प्रसन्न हो गए। महात्मा ने अपनी शक्तियों से वात्सल्य को एक तलवार थमाते हुए कहा, 'यह तलवार लो और विश्व विजेता बनो।' वात्सल्य ने कहा, 'महाराज, मैं अपने नगर में खुश हूँ, लोग मुझसे खुश हैं, विश्व विजेता, बनकर मैं इतने बड़े समुदाय का ध्यान रखने में असमर्थ रहा तो क्या होगा।' महात्मा ने तलवार लेकर पारसमणि देते हुए कहा, 'फिर यह पारसमणि लो और खूब धन प्राप्त करो। वात्सल्य ने कहा, 'पत्थर को सोना बनाकर मुझे क्या हासिल होगा। मेरे लिए तो मेरी प्रजा ही सोना चाँदी है।' महात्मा ने कुछ सोच कर कहा, कहो तो स्वर्ग की अप्सरा तुम्हारे लिए धरती पर ले आऊँ? कुछ तो मांगो राजन! वात्सल्य ने बिना विचलित हुए कहा, 'अप्सरा तो स्वर्ग में ही शोभा पाती हैं। मुझे उनसे क्या काम?' महात्मा समझ गए कि वात्सल्य को क्या चाहिए। उन्होंने कुछ बीज वात्सल्य के हाथ थमाते हुए कहा, 'लो राजन! यह अपनापे के बीज हैं। इन्हें अपने नगर के खेतों में बो दो। खूब लहराती हुई फसल होगी। इनसे इतनी फसल होगी कि किसी को भूखा नहीं सोना होगा। ये बीज जहाँ भी बोए जाएंगे, वहाँ जड़-चेतन, शत्रु-मित्र सब हिलमिल कर रहेंगे।' वात्सल्य ने तरुन्त उन बीजों के लिए अपनी हथेली पसार दी। उसने सोचा, तलवार का पानी एक दिन उतरने वाला है, धन का दुरुपयोग अधिक होता है। स्त्री का रूप भी एक दिन नष्ट हो जाएगा लेकिन अपनापे के ये बीज हर तरह से खुशहाली ले आएंगे।

तो इस तरह अपनापे के बीजों से प्राप्त फसल को खाकर नगर के सभी लोगों में इस तरह के भावों का विकास होगा जिससे सभी लोग अपने को अपना मान कर सब खुशी से रहेंगे। तो मेरा भी यही संदेश है कि अपने भी समाज को इसकी आवश्यकता है। यह भावना होना हमारे समाज में गौरव की बात है। शायद स्व. श्री तनसिंह जी को भी यही विचार आया होगा। तो उन्होंने 22 दिसम्बर, 1946 को श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। अगर ऐसा कोई संघ (संगठन) का निर्माण करूँ जिससे मेरा समाज कभी बिखरे नहीं। हमेशा एकता बनी रहे। हमारे अन्दर आत्मीयतापूर्ण व्यवहार होना चाहिए इन्हीं व्यवहार से उत्फुल्ल होता है समाज। शिकवा-शिकायतें भूल जाएं अपनापन को हमारे जीवन में लायें अर्थात जीवन-व्यवहार में इन्हें बदलें। धारणाओं को बदलें, आग्रह को बदलें और समन्वय का दृष्टिकोण अपनाएं। सद्भाव का सबसे बडा सूत्र है, व्यापक दृष्टिकोण। व्यक्ति विविधता को सहन करना सीखें। यह प्रकृति का सार्वभौम नियम है। इसे कोई बदल नहीं सकता। यह हमारी सम्यक अवधारणा बन जाए। अगर हम सद्भावना के आधार पर चलें तो सर्वधर्मसमभाव की बात फलित हो सकती है। समाज व राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने के लिए यह जरूरी है। किसी में भी किसी प्रकार का क्रोध, ईर्ष्या आदि भाव नहीं आये। सब अपनी उपजाति को भूल कर एक क्षत्रिय होने का दावा करें। एक क्षात्रधर्म का पालन करते हुए अपने समाज तथा संघ को मजबूत बनाएँ। अपनापन की भावना से सभी के हृदय प्रेम भावना से भरें तभी तो हमारे समाज का विकास होगा। अर्थात् अपनापन ही सबसे बड़ी शक्ति है, उसके अभाव का खामियाजा हम पहले ही भुगत रहे हैं। फिर से संभलना पड़ेगा। इसी अपनापन की भावना से ओत-प्रोत होकर हम अपने समाज का उत्थान कर सकते हैं।

●

संघशक्ति

अन्तिम कुरु

– संकलित

''मैं!'' हाथ में थरथराता हुआ राजदण्ड सँभालते हुए पितामह भीष्म के रूप में हिमालय का वह उच्च शिखर बोलने लगा। उनका एक-एक शब्द उस शिखर से गिरनेवाला भीतिदायक प्रपात ही था– ''तुम्हारे सामने खड़ा हुआ यह भीष्म ही अन्तिम कुरु है, जो इस अवस्था में भी आशा की किरण ढूंढ़ रहा है। कौरव-पाण्डव कुरु-कुलोत्पन्न नहीं हैं। फिर भी वे आज न जानें क्या सोचकर जन्म-जन्म के बैरियों की तरह अपने मस्तक एक-दूसरे से टकरा रहे हैं, इसके कारण का पता लगाते हुए मेरा मन विषण्ण हो रहा है। इसीलिए कुरुकुल का सत्य वंश-वृत्तान्त बताने के लिए ही मैं अपने मन पर भारी पाषाणों का भार रखकर खड़ा हुआ हूँ। ध्यान देकर सुनिए कि, धृतराष्ट्र, पाण्डु और विदुर-ये एक दूसरे के भाई हैं। उनका पिता एक ही है। पराशरपुत्र व्यास। हाँ, माताएँ अलग-अलग थीं। इस सभागृह में बैठे धृतराष्ट्र के सौ पुत्र व्यास के वंशज हैं। युवराज दुर्योधन भी। और पाण्डव पाण्डु के पुत्र नहीं हैं, यह जितना सत्य है उतना ही यह भी सत्य है कि वे पाप के पुत्र नहीं हैं। महारानी कुन्ती और माद्री को ऋषिवर्य दुर्वासा के शक्तिमान् मन्त्रों से प्राप्त हुए पाण्डव पाप से उत्पन्न हैं, यह कौन कह सकता है? और इससे भी अधिक भयानक सत्य यह है कि जैसा कि आप लोग समझते हैं, वैसे पाण्डव पाँच ही नहीं हैं! एक और 'छठा-पाण्डव' भी है, लेकिन वह संसार को कभी दिखाई नहीं दिया.... क्योंकि.... क्योंकि मैंने उसको अपने जन्म से ही दुर्भाग्य के चक्कर में पड़ा हुआ देखा है। उसके लिए मेरा हृदय तिल-तिलकर टूटता रहा है।

''इसीलिए अन्तिम बार मैं कहता हूँ....तुम कुरु लोगों के अन्तिम कुरु के रूप में कहता हूँ कि जिस राज्य का दिग्विजयी पाण्डु ने विस्तार किया और इस धृतराष्ट्र ने जिसका पालन-पोषण किया, उस राज्य को कौरव और पाण्डव आधा-आधा बाँट लें। कौरवों का नेतृत्व करने वाले और कुशल गदावीर के रूप में प्रसिद्ध दुर्योधन को कम से कम अपने गदागुरु का आदर्श ही आँखों के आगे सदैव जाग्रत् रखना चाहिए। उसका गुरु बलराम अपने भाई श्रीकृष्ण का परामर्श लिये बिना तिनका तक नहीं तोड़ता। कौरव-पाण्डवों को बलराम श्रीकृष्ण का सम्बन्ध आँख खोलकर देखना चाहिए। और जिस कर्ण का दुर्योधन ने गौरवपूर्ण उल्लेख किया है, उस वीर कर्ण को भी आकाश में एक सौ पाँच सीढ़ियाँ खड़ी कर उनपर अपना पैर रखने का कर्तृत्व दिखाना चाहिए। इस सभागृह के एक भी सभासद् को यह नहीं भूलना चाहिए कि राजमाता कुन्ती पवित्र है और उसके पुत्र तेजस्वी महावीर है।'' थर-थर काँपते हुए पितामह नीचे बैठ गये।

सभा का काम आगे कैसे चला, इस ओर किसी का भी ध्यान नहीं था। बाद में महामन्त्री विदुर, अमात्य एवं महाराज बोले, परन्तु किसी का भी मन इतना स्वस्थ नहीं था जो उनकी बातें सुनता। हाँ, महारानी गान्धारी देवी को अकस्मात् खड़ी होते देखकर सबके आश्चर्य की सीमा न रही। वे जैसे-तैसे एक ही वाक्य कह पायीं, ''दुर्योधन अब भी चेत जा और पाण्डवों को वन से वापस बुला ला।'' आच्छादित आँखों वाला मुख क्षण-भर सभागृह पर घुमाकर वे भी आसनस्थ हो गयीं।

सभा विसर्जित हो गयी। सभागृह छोड़ते समय मेरा मन केवल एक ही बात की ओर चक्कर काट रहा था। पितामह ने जिसका उल्लेख किया था वह 'छठा पाण्डव' कौन था? यदि पाण्डवों से समझौता असम्भव ही हो जाये, तो वह अचानक कहीं से आकर अपने भाइयों की, सहायता करेगा क्या? जैसे सभी पाण्डव मन्त्रशक्ति से उत्पन्न हुए हैं, वैसे ही वह भी क्या मन्त्र से ही उत्पन्न हुआ होगा? कितना सामर्थ्यशाली होगा वह? उससे लड़ते समय मैं कहीं दुर्बल तो नहीं पड़ूँगा? जन्म से ही वह अभागा कैसे है? और अन्य पाण्डवों को भी सौभाग्यशाली कौन

कहेगा? विचारों के आवर्त में मेरा मन शुष्क पर्ण की तरह चक्कर काट रहा था। पाण्डव और कौरव- इनमें से कोई भी कुरुकुल का नहीं है। पितामह भीष्म यदि अन्तिम कुरु हैं, तो राजसिंहासन किसका है, यह प्रश्न क्या अब और अधिक जटिल नहीं हो गया था? कौन सुलझायेगा इस गुत्थी को? मेरे मन के प्रांगण पर शंकाओं के घोड़े स्वच्छन्द चौकड़ी भरने लगे। किसको रोका जाये यही समझ में नहीं आता था। सिर झुकाकर बोझिल चरणों को धीरे-धीरे रखता हुआ मैं सभागृह के बाहर बने हुए शुभ्र पाषाणों के फ़र्श वाले चबूतरे को पीछे छोड़ता जा रहा था। अस्त होते हुए सूर्य की किरणें राजप्रासाद की चहार-दीवारी के ऊपर से फिसलती हुई उस फ़र्श पर गिरकर बिखरने के कारण एक विचित्र रंग पैदा हो रहा था। मेरे कन्धे पर पड़े हुए अतलसी उत्तरीय का एक छोर खिसककर नीचे गिर पड़ा था, वह फर्श पर फरफराता आ रहा था। उत्तरीय का जो छोर देह पर था वह मैंने चलते-चलते ही कलाई के चारों ओर कसकर लपेट लिया। कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। संसार में किसी के दुख किसी के हृदय में क्यों कसक पैदा करते हैं? यह संसार आखिर है क्या? **– 'मृत्युंजय' से संकलित**

पृष्ठ 23 का शेष : मातृशक्ति का दायित्व

कुरीतियाँ हैं जिन्हें समाप्त करने के लिए भी मातृशक्ति को यदि अपने दायित्व का बोध होगा तो वह अवश्य ही ठोस कदम उठाएगी। इन सब के लिए उनको हमारे इतिहास के बारे में बताना होगा। उन्हें बोध कराना होगा कि तुम उसी महारानी पद्मिनी की संतान हो जिसके चेहरे को देखने मात्र के प्रस्ताव के कारण ही राज्य में शाका हो गया, उसी हाड़ी रानी की वंशज हो जिसने अपने पति के कर्तव्य पथ पर अपने आपको बाधा बनते देख अपना सिर काट कर दे दिया। उसी पन्नाधाय के कुल में जन्म मिला है जिसने राष्ट्रहित के लिए अपने पुत्र का भी बलिदान दिया, उसी महारानी हाड़ी जसवंत दे का रक्त तुम्हारे अंदर दौड़ रहा है, आपको उन्हीं क्षत्राणियों के कुल में जन्म मिला है जिन्होंने उस युग की मांग के अनुसार अपना सब कुछ समर्पित कर दिया। यही काम श्री क्षत्रिय युवक संघ कर रहा है, जगह-जगह बालिका शिविरों का आयोजन हो रहा है। संघ मातृ शक्ति के उच्च व्यक्तित्व का निर्माण कर रहा है। इस संस्कार निर्माण धारा का अवश्य लाभ उठाएं। ●

पृष्ठ 24 का शेष

अहं भाग्यशाली क्षत्रियगोत्रे जातः!!!

पुण्यतिथि भी है। 15 नवम्बर, 1986 को सती जी ने देह त्यागी थी। यह बड़ा संजोग था कि माता की पुण्यतिथि के दिन ही हमें वहाँ के आंगन में जाकर बैठने का सुअवसर प्राप्त हुआ। जैसलमेर में झील, वो भी बीस किलोमीटर में फैली हुई। यह शब्द पहली बार सभी बहनों ने सुना व शाखा भ्रमण में नजदीक से व नभ डुंगर से बुध झील के दृश्य को देखा। शाखा भ्रमण ने हमारे ऐतिहासिक स्थलों के दर्शन व जानकारी के साथ साथ हमारे बौद्धिक ज्ञान में अभिवृद्धि करवाई। मैंने अपने मार्गदर्शको में विनम्रता एवं धैर्य की प्रकाष्ठा को भली तरह से देखा है। शिविरों में भी क्षत्रियत्व संस्कारों का प्रशिक्षण प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ। श्री क्षत्रिय युवक संघ इन्हीं गुणों के विकास के लिए प्रयासरत है।

कृतज्ञता से मस्तक झुक जाता है, मेरे समाज के प्रेरणास्रोत पुज्य श्री तनसिंह जी के आगे जिन्होंने ऐसी अनुठी प्रणाली बनाई। जहाँ अपने कर्तव्य का बौध शाखाओं, शिविरों, खेल के मैदानों, सहगायन के धमचक व नवाचार भ्रमण के माध्यम से कराया जाता है।

भारत वर्ष इसी से होगा कलियों वाला रे,
कलियों वाला रे।

जय संघशक्ति!

ईश्वरावतारों का वंशज क्षत्रिय समाज–वर्तमान स्थिति

– राजेन्द्र सिंह रानीगांव

हमारी धार्मिक मान्यताओं के अनुसार मनुष्य योनी में जन्म लेना बहुत ही सौभाग्य का विषय है। मनुष्यों में भी क्षत्रिच कुल में उत्पन्न होना पुण्यात्माओं के लिए भी दुर्लभ माना गया है।

सनातन परम्परा अनुसार विश्व के पालन कर्ता साक्षात् श्री हरि विष्णु ने जब–जब भी पृथ्वी पर अवतार लिया है तब तब ही उन्होंने क्षत्रिय कुल में अवतरित होकर इस कुल को गौरव प्रदान किया है। त्रेता में मर्यादा पुरुषोत्तम प्रभु श्री राम एवं द्वापर में योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण हमारे ही पूर्वज थे, जैन मतावलम्बियों में अब तक हुए 24 के 24 तीर्थंङ्कर (भगवान् ऋषभ देव से लेकर भगवान महावीर तक) एवं बोद्ध मत के प्रवर्तक भगवान गौतम बुद्ध भी क्षत्रिय कुलोत्पन्न थे। क्षत्रिय समाज के प्रत्येक सदस्य के लिए यह गर्व का विषय है कि हम उसी वंश परम्परा का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसमें साक्षात् सर्वेश्वर भगवान अवतरित हुए।

भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो उपेदश ''श्रीमद्भवगद्गीता'' के रूप में दिया उस पवित्र ग्रन्थ के 18वें अन्याय के 43वें श्लोक में उन्होंने क्षत्रिय के नैसर्गिक गुणों को बताया है। उसके अनुसार–

''शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं, युद्धे चाप्य पलायनम्।
दानमीश्वर भावश्च, क्षात्रं कर्म स्वभावजम।।

अर्थात् शूरवीरता, तेज, चित्त की दृढ़ता (धृति, धैर्य) युद्ध से पलायन न करना, दान देना एवं स्वामी भाव ये सब क्षत्रिय के स्वाभाविक कर्म हैं।

क्षत्रिय की इसी विशेषता के कारण उसे ''अमृत'' समाज के ''रक्षक'' एवं ''विष'' समाज के दमनकर्ता के रूप में सनातन परम्परा में प्रतिष्ठित किया गया है। अपने नैसर्गिक कर्तव्य के पालन की प्रतिबद्धता का भाव हमारे वंश परम्परा से प्राप्त "DNA" –में, अभी भी (परिवर्तित राजनैतिक एवं सामाजिक स्थिति में भी) विद्यमान है।

यश एवं कीर्ति से परिपूर्ण स्वर्णिम पृष्ठभूमि में जब हम समग्र रूप से क्षत्रिय समाज की वर्तमान स्थिति का वस्तुनिष्ठ आंकलन करने का सद्प्रयास करते हैं तो जो चित्र हमारे समक्ष उभरता है वह चिंताजनक परिदृश्य प्रस्तुत करता है।

भगवान् श्री कृष्ण ने क्षत्रिय के जो 7 स्वाभाविक लक्षण (शौर्य, तेज, धृति, दक्षता, युद्ध से पलायन न करना, दान देने वाला एवं स्वामी भाव से युक्त) बतलाये हैं उनमें से शौर्य एवं तेज के प्रदर्शन का सुअवसर आदिकाल, मध्यकाल, मुगल काल, अंग्रेजी काल एवं आधुनिक समय में स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् लड़े गये विभिन्न युद्धों (यथा 1948 (कश्मीर), 1962, 1965, 1971 एवं 1999) में सर्वाधिक बलिदानों एवं ''वीरता'' पदक प्राप्त कर ख्याति अर्जित की है। हमारे योद्धाओं ने कभी भी युद्ध से पलायन नहीं कर अपनी वंश परम्परा का यथेष्ट निर्वहन किया है।

अब हम उस गुण कर्म के ऊपर अपने विमर्श को केन्द्रित करते हैं जिसमें ''क्षरण'' के कारण समाज को अपूर्णीय क्षति हुई है तथा वर्तमान समय में भी यह क्षरण निरन्तर अनुभव किया जा रहा है, क्योंकि इस एक गुण की कमी से हमारे दूसरे गुण पार्श्व में चले जा रहे हैं।

यद्यपि समस्त गुण क्षत्रिय धर्म के पालन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं परन्तु इनमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ''धृति'' (धैर्य अर्थात् चित्त की दृढ़ता से ही चरित्र की दृढ़ता हो सकती है) के गुण को माना जाता है क्योंकि इसी गुण से हमारा चरित्र ''निर्मित'' होता है। अत: ''धृति'' की कमी अथवा मन की बढ़ी हुई चंचलता के कारणों एवं इसके

फलस्वरूप होने वाले दुष्परिणामों के बाबत चिंतन आवश्यक है।

सर्वप्रथम हम कारणों पर चर्चा करते हैं। यद्यपि समय, काल एवं परिस्थितियाँ ''धृति नाशक'' शक्तियों के प्रभावी होने के अनेक कारणों के जन्मदाता हैं तथापि हमारी दृष्टि में निम्न प्रमुख कारणों से हमारी ''धृति'' गुणशीलता नकारात्मक रूप से प्रभावित हो रही है–

- संस्कार निर्माण की पौधशाला संयुक्त परिवार एवं सामाजिक संस्थाओं को माना जाता है तथा ये दोनों ही घटक स्वयं विघटन तथा भौतिकता की आपा-धापी में अपने अस्तित्व को बचाने में सफल नहीं हो पा रहे हैं अत: बालकों में संस्कार शून्यता की स्थिति बन गई है।
- राष्ट्र के नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों में सर्वांगीण गिरावट का असर हमारे समाज पर भी पड़ा है।
- वर्तमान शिक्षण व्यवस्था में व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति के कारक ''अहम्'' को पुष्ट करने वाली विचारधारा का प्राबल्य है एवं नैतिक मूल्यों की स्थापना पर ध्यान बहुत कम अथवा नगण्य रूप से दिया जाता है।
- राष्ट्र की स्वतंत्रता (1947) के पश्चात् हम राज्य सत्ता के केन्द्र बिन्दु से हटने के साथ ही हम समाज के नीति निर्धारक से सीधे 'अनुसरण' कर्ता बन गये तथा दुर्भाग्य से हमारे आदर्श नवधनाढ्य परन्तु नैतिक रूप से कमजोर व्यक्ति बन गये। फलस्वरूप समाज उनका अन्धानुकरण करने लग गया है। हमारी चारित्रिक गिरावट के और अनेक कारण रहे हैं परन्तु वर्तमान विमर्श में उपरोक्त कारणों को ही केन्द्र में रखा गया है।
- सर्वाधिक नकारात्मक प्रभाव हमारे सामाजिक एवं राजनैतिक स्तर पर पड़ा है। जहाँ पूर्व में समाज के शेष तीनों (ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र) अंग हमें सर्वाधिक सम्मान देते थे अब वह ''समाज परक'' से ''व्यक्ति परक'' हो गया है वह भी नाममात्र का रह गया है। राजनैतिक रूप से सत्ता के केन्द्र बिन्दु से हटकर कमजोर ''शासित'' वर्ग के रूप में माने जाते हैं।
- हमारे चारित्रिक क्षरण का अत्यन्त घातक दुस्प्रभाव व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन पर पड़ रहा है। संयुक्त परिवार अब शीघ्र ही इतिहास का विषय बन जायेंगे, विवाह जैसा पवित्र संस्कार जो 7 जन्मों के लिए स्थाई माना जाता था वह संस्कार से हटकर एक ''करार'' की श्रेणी में आ गया है तथा इसके 7 वर्ष, 7 महीने अथवा 7 दिन तक के स्थायित्व की गारण्टी नहीं रही है। विवाह विच्छेद जो सामाजिक संस्कारों में अनुमत नहीं है वह आज के समय में मात्र ''सामान्य दुर्घटना'' की श्रेणी में आ गया है तथा न्यायालयों में हमारे समाज से सम्बन्धित विवाह-विच्छेद के निरंतर बढ़ते हुए प्रकरण हमारे पारिवारिक एवं सामाजिक ढाँचे तथा उसके नेतृत्व की विफलता का जीवन्त प्रमाण है।
- जटिल होती पारिवारिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर कम आयु में ''वैधव्य'' की पीड़ा से ग्रसित ऐसी युवा क्षत्राणियों के लिए पुनर्विवाह का जो व्यावहारिक निर्णय समाज ने स्वीकार किया था उसके स्थान पर ''तलाक'' शुदा महिलाओं/युवतियों की तेजी से बढ़ रही संख्या समाज के भविष्य के लिए अत्यन्त घातक है।
- हमारे समाज की युवा पीढ़ी में अनुलोम एवं प्रतिलोम विवाह के प्रति बढ़त रुझान गम्भीरतम चिंता का विषय है।

हाल के समय तक प्रवासी वणिक वर्ग अपनी कुल वधुओं/मातृशक्ति को किसी क्षत्रिय चालक के ऊपर पूर्ण विश्वास के साथ यात्रा पर भेज देता था। यही वणिक वर्ग अपने करोड़ों रुपयों की अचल सम्पत्ति किसी साधारण क्षत्रिय की सुरक्षा में छोड़कर

अर्थोपार्जन हेतु बाहर जाता था एवं वापसी पर सम्पदा को सुरक्षित पुन: प्राप्त कर लेता था।

- किसी रेल/बस अथवा स्थान विशेष पर क्षत्रिय मात्र की उपस्थिति से उस स्थान की मातृशक्ति अपने आपको पूर्ण सुरक्षित समझती थी, अब यह परिदृश्य तेजी से बदल रहा है अर्थात् हमारे प्रति विश्वास में कमी आई है। इस कटु सत्य को हमें स्वीकार करना ही होगा। उपरोक्त विवेचन के पश्चात् हमें प्रख्यात अमेरिकन विचारक श्री बिली ग्राह्म (1918-2018) की उक्ति का उल्लेख करना समीचीन प्रतीत होता है। उन्होंने लिखा है-

"If weath IS lost. Nothing is lost."
(यदि धन की हानि हुई तो कोई हानि नहीं)
"If Health is lost. Some thing is lost."
(यदि स्वास्थ्य की हानि हुई है तो कुछ हानि हुई है)
"If character is lost. Every thing is lost."
(यदि चरित्र की हानि हुई तो सब कुछ नष्ट हो गया)

हमारे समाज के परिपेक्ष्य में यह उक्ति अत्यन्त सटीक बैठ रही प्रतीत होती है क्योंकि चारित्रिक दृष्टि से हम संपूर्ण समाज में इसी प्रकार उज्ज्वल ''धवल'' छवि के साथ अलग से प्रतिष्ठित थे जैसे पक्षियों में ''हंस'' अपनी उज्ज्वल आभा से विशिष्ट स्थान रखता है। आज हमारी इसी सर्वाधिक महत्वपूर्ण पूंजी ''चरित्र'' पर प्रश्न चिह्न लगने प्रारम्भ हो चुके हैं इसके साथ ही राज सत्ता का केन्द्र लोकतांत्रिक व्यवस्था में संख्या बल की तरफ स्थानान्तरित होने के कारण हमारे ''स्वामीभाव'' के गुण का ''लोपन'' भी अनुभव किया जा रहा है।

कृषि कार्य से पलायन एवं शहरों में आवास की ललक ने हमारे खान-पान की शुद्धता को एवं पोष्टिकता को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है ऊपर से कोढ में खाज के रूप में नशे की प्रवृत्ति को सामाजिक स्वीकृति ने ''क्षत्रिय'' युवाओं के स्वास्थ्य को कमजोर करने का कार्य किया है।

पूर्व में शासन, प्रशासन एवं 'युद्ध' कार्य में 'दक्षता' क्षत्रियों का आवश्यक गुण था अब वर्तमान में ''दक्षता'' की आवश्यकता हमारे कार्यक्षेत्र के अनुसार हो गया है। चाहे वह सेवा वृति हो अथवा उद्योग-व्यापार का क्षेत्र हो उसमें ''दक्ष'' होना हमारा व्यक्तिगत एवं सामाजिक-व्यावहारिक कर्तव्य है। इस क्षेत्र में भी समग्र रूप से समाज ''दक्षता'' की कमी स्पष्टतया अनुभव करता है।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं कि ईश्वर द्वारा क्षत्रिय के लिए निर्धारित 7 गुण कर्मों में से शौर्य, तेज एवं युद्ध से पलायन न करने के गुण अभी भी निर्विवाद रूप से हम में विद्यमान हैं, इन्हें बढाने की आवश्यकता है। धृति, दक्षता, दान देने की शक्ति एवं स्वामीभाव इन 4 गुणों में ह्रास हुआ है, इनको किस प्रकार पुन: प्राप्त करना है यह हमारे सामुहिक चिंतन का विषय है। सुधार की रूपरेखा क्या हो? उसको किस प्रकार कार्यात्मक रूप दिया जा सकता है इस बावत सुधी पाठकों के व्यावहारिक चिंतन की अत्यन्त आवश्यकता है। चिंतन के साथ परस्पर विचारों का आदान-प्रदान भी चलता रहे।

●

मनुष्य के पास कुछ होने और बनने की स्वतंत्रता है। वह कुछ भी बन सकता है। अच्छे से अच्छा, बुरे से बुरा, इनसानी सिफतों के शिखर भी उन्हीं में दिखते हैं और इनसानी खामियों की खाईयाँ भी उन्हीं में होती हैं। इसीलिए तो इतनी नाउम्मीदों में भी उम्मीद नाम की चीज सदैव कायम हैं।

- अमृता प्रीतम

कर्तव्य

– मनोज कुमार महेश्वरी

मैं उस शब्द पर कुछ लिखने का प्रयास कर रहा हूँ जो सृष्टि के आदिकाल से लेकर आज तक निरन्तर चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलता रहेगा। वह शब्द है कर्तव्य। कर्तव्य को परिभाषित करना बहुत कठिन है फिर भी मैं इस लेखनी के माध्यम से सिर्फ उसकी परिभाषा देने का एक छोटा-सा प्रयास कर रहा हूँ।

कर्तव्य अन्तःकरण से निकलने वाला वह आभासी नियम है जिसे मनुष्य संसार में जन्म लेने के बाद करता है क्योंकि समाज (वह आवासीय जन भाग) में रहने पर कुछ सामाजिक नियमों का पालन करना होता है इन्हीं नियमों को कर्तव्य या उत्तरदायित्व की संज्ञा दे सकते हैं।

समाज ने कुछ ऐसे नियम बनाए हैं जिसमें मनुष्य पर कुछ सामाजिक बंधन रह सके ताकि मानव पशुत्व में परिवर्तित न हो और समाज में शान्ति और सुख रहे। इसीलिए जन्म से लेकर मृत्यु तक मनुष्य को कुछ न कुछ जिम्मेदारियाँ निभानी पड़ती हैं।

भारतीय संस्कृति का सामाजिक ताना-बाना अन्य देशों की सामाजिक संरचना से श्रेष्ठ रहा है। जहाँ अन्य देशों में परिवार तथा सामाजिक संरचना छिन्न-भिन्न हो रही है वहीं भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति अपनी विशिष्टता बनाए रहे हुए है इती बात को शायर अल्लामा इकबाल ने लिखा है-

यूनान, मिश्र, रोमा, सब मिट गये जहाँ से।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।

इसका मुख्य कारण है सनातन चले आ रहे सामाजिक नियम जिनका पालन पीढ़ी-दर-पीढी चला आ रहा है। यहाँ का पारिवारिक ढांचा इतना मजबूत तथा व्यवस्थित रहा है कि व्यक्ति को बचपन से ही इन नियमों का पालन करने का अभ्यास कराया जाता रहा है। समाज ने कुछ कर्तव्य निर्धारित किये हैं इनमें से कुछ नियमों व कर्तव्यों पर संक्षेप में आगे प्रकाश डालने का प्रयास कर रहा हूँ:-

1. परिवार के प्रति :- भारतीय परिवार की संरचना संयुक्त के रूप में है जिसमें तीन-तीन, चार-चार पीढ़ियां एक साथ रहती हैं। परिवार के सभी सदस्य अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। जैसे माँ का कर्तव्य है बच्चे का पालन-पोषण करना, उसकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध करना। पिता का कर्तव्य परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करना। परिवार को व्यवस्थित रखना। परिवार के अन्य सदस्य इसमें सहयोगी की भूमिका निभाते हैं।

2. समाज के प्रति :- समाज में रहने वाले सभी लोगों का दायित्व है कि सामाजिक नियमों का पालन करें। आपसी भाईचारा व मेल-मिलाप बनाए रखें। सभी धर्मों का सम्मान करें।

3. देश के प्रति :- अपनी मातृभूमि, अपने राष्ट्र के प्रति सम्मान की भावना रखे। उसके लिए अपना सर्वस्व त्याग करने को तत्पर रहे, संविधान के नियमों का पालन करें, राष्ट्र पर आने वाली विपत्ती का सामना करें। राष्ट्र हित के लिए अपने हित का त्याग करें।

4. प्रकृति के प्रति :- हमारा कर्तव्य है कि प्रकृति संरक्षण के लिए सदा तत्पर रहें। प्रकृति को नष्ट होने से बचायें। जीव-जन्तुओं पर दया भाव रखें तथा प्राकृतिक संतुलन बनाए रखें।

कर्तव्य पालन यथा- माता पिता की सेवा, दीन-दुखियों की मदद, राष्ट्र के प्रति प्रेम, समाज के प्रति कर्तव्य पालन से मानसिक शान्ति मिलती है, आत्मा तृप्त होती है, उसे सुकून मिलता है, भगवान की प्राप्ति होती है। इन्हीं कर्तव्यों के बंधन में बंधकर जब समाज में जीता है तो उसे इज्जत मिलती है, उसे जीवन जीने की कला का ज्ञान होता है, इन नियमों में बंधकर भी वह अपने आपको स्वतंत्र महसूस करता है।

(शेष पृष्ठ 33 पर)

खुड़द माता : श्री इन्द्र बाईसा

– भंवरसिंह मांडासी

श्री करणी भक्त एवं आवड़ावतार, अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रतधारिणी, खुड़द माता के नाम से सुविख्यात श्री इन्द्रबाईसा का अवतरण वि. सं. 1964 आषाढ़ शुक्ला नवमी शुक्रवार को नागौर जिले के खुड़द ग्राम में श्री सागरदानजी रत्नू की धर्मपत्नी श्रीमती धापूदेवी की कोख से हुआ। इनको आदि शक्ति हिंगलाज की अवतार परम्परा में चौथे अवतार के रूप में पूजा जाता है।

बाल्यकाल से ही मन ईश्वर भक्ति में लग गया था। अखण्ड ब्रह्मचर्य व कौमार्य व्रत धारण कर भगवान शिव की आराधना में लग गये। पाँच साल की आयु में घर के समक्ष खड़े खेजड़ी के वृक्ष तले श्री करणीजी का स्थान प्रतिष्ठापित कर पूजा-अर्चना करना प्रारम्भ कर दिया।

चमत्कारों की फेहरिस्त बाल्यकाल से ही प्रारम्भ होने लगती है। कहा जाता है एक बार पिताश्री सागरदानजी बेसरोली ग्राम से नवरात्रि सामान के साथ बच्चों के लिए नये वस्त्र लाये। जिनमें इन्द्र बाईसा के भी एक जोड़ी पारम्परिक कपड़े थे, जिसे बाईसा ने नकार दिया और कहा कि मैं औरतों जैसी पोशाक न पहनकर पुरुषों जैसे कपड़े धारण करूँगी। पिताजी ने कहा कि अगली बार मर्दाना पोशाक ले आऊंगा। रात्रि के समय पिताजी के पेट में असहनीय दर्द होने लगा। आस-पास के हकीमों ने इलाज किया लेकिन उदर-शूल कम नहीं हुआ। समस्त परिवार को उदास देखकर बाईसा बाहर से खेलते-खेलते अन्दर आ पहुँचे व पिताश्री से पूछा- ''पिताजी आपको क्या हुआ?'' पिताजी ने कहा- ''बेटी उदर-शूल से प्राण निकले जा रहे हैं।'' इस पर बाईसा में कहा- ''पिताजी! यह दर्द तो अभी मिटा देती हूँ, लेकिन आपको मुझे आजीवन मर्दाना पोशाक पहनने की अनुमति देनी पड़ेगी।' यह सुनकर पास बैठे सभी लोगों ने कहा कि यह अबोध बालिका एक देवी का रूप है और यह जो कहती है, उसे स्वीकार कर लेना चाहिए, तब पिताजी ने कहा कि- ''मेरी आज्ञा है कि तू सदैव मर्दाना वेश में ही रहेगी और मैं ठीक होते ही तुझे मर्दाना पोशाक लाकर दूंगा।'' इस पर सागरदानजी के उदर पर ऊपना नन्हा हाथ फेरकर कहा- ''पिताजी! कहाँ दर्द है?'' तुरन्त ही पिताजी ने कहा कि- ''बेटी, अब तो दर्द नहीं है।'' अब अपने अनुपम सुन्दर नारी रूप को छुपाने के लिए धोती, अंगरखा व साफा के गणवेश में रहने लगे।

संवत् 1968-69 के आसपास आश्विन शुक्ला एकम नवरात्रि स्थापना के अवसर पर अपने सुकोमल हाथों से अनगढ़ शिला को प्रतिष्ठापित कर श्री करणी माता की स्थापना की। कहा जाता है कि एक बार नवरात्रि के दिनों में करणी माता की पूजा-अर्चना करते समय नारियल की आवश्यकता हुई। नारियल नहीं मिलने पर सभी लोग चिंतित थे। बाईसा ने कहा कि- चिंता छोड़ो, हम चिंता क्यों करें? माँ करणी माता को जैसा अच्छा लगेगा, वैसा ही होगा। इतने में एक श्वेत चील उड़ती हुई आई और पूजा स्थल वाली खेजड़ी के ऊपर बैठी। देखते ही देखते खेजड़ी से नारियल गिरा, जिसे ज्योती में हवन किया गया।

पाँच बरस की इन्द्र कुंवर जब थरप्यो थान मेहाणी को।
श्रीमद आगै खड़यो खेजड़ो, है साची सहनाणी को।
मिल्यो नहीं श्रीफल सेवा हित, सोच बढ़यो इन्द्राणी को।
तभी बिरख सूं श्रीफल बरस्यो, चमत्कार दाढ़ाली को।।

खुद के निकट ही अवस्थित गेढ़ा ग्राम के ठाकुर गुमान सिंह ने बाईसा के चमत्कारों को सुनकर कहा, ''यह कहाँ की शक्ति है। मैं नहीं मानता। सब पाखण्ड है और अगर शक्ति है तो मुझे चमत्कार दिखाए।'' संयोग से एक रोज बाईसा अपने पिता के साथ गेढ़े के गढ़ में मर्दाना वेश में पहुँची। ठाकुर ने पिता-पुत्री का यथोचित आदर-सत्कार नहीं

किया और व्यंग्यात्मक भाषा में कहा– ''छोरी! तू तो बहुत ही अन्तर्यामी और ब्रह्मज्ञानी है। बता मेरी मृत्यु कब और किस तिथि को है? वरना पाखण्ड का बाना क्यों पहन रखा है?'' श्री इन्द्र बाईसा ने कहा– ''ठाकुर साहब इस रास्ते तो सभी को जाना है। मृत्यु तो शाश्वत है। कोई अन्य बात पूछनी चाहिए थी।'' ठाकुर के न मानने पर बाईसा ने कहा– ''आज के नौवें दिन नौ लख योगिनियाँ तुम्हारा भक्षण कर अपने नवरात्रि व्रत का 'पारन' करेंगी।'' ठाकुर ने अन्य लोगों के साथ बाईसा का उपहास उड़ाया। नौवें दिन ठाकुर गढ़ की छत पर टहल रहे थे और मन ही मन बाईसा के वचनों पर हंस रहे थे कि अचानक ठाकुर गश खाकर गिर जाते हैं। गढ़ के ऊपर चीलों को मंडराते देख लोग छत पर गये तो ठाकुर को मृत अवस्था में पाया।

इसी प्रकार छह वर्ष की आयु में बोरावड़ ठाकुर ने बाईसा की शक्ति पूजन का उपहास उड़ाया तो उनकी जबान बन्द हो गई। नीमराना के जागीरदार उमरावसिंह की पुत्री अनोप कंवर जन्म से ही विकलांग थी। उपचार से लाभ नहीं हुआ तो बाईसा की शरण में आई। माताजी की आरती के समय महिलाएँ घूमर नृत्य करती थीं। एक दिन बाईसा ने कहा– ''अनोप तुम भी नाचो।'' अनोप कुंवर ने रोते हुए कहा– ''अन्नदाता! मेरा सौभाग्य कहाँ जो मैं आपके समक्ष नृत्य कर सकूँ।''

सिंहासन से उठकर बाईसा ने अनोप कंवर का हाथ पकड़ कर नृत्य करने हेतु हिलाना शुरू किया कि देखते ही देखते अनोप कंवर की पंगुता समाप्त हो गई व नाचने लगी। ●

पृष्ठ 31 का शेष : कर्तव्य

भगवान कृष्ण ने भी गीता में कर्तव्य कर्म करने का उपदेश दिया है तथा फल की इच्छा का त्याग करने की बात बताई है। मैं भी कर्तव्य–कर्म पथ पर चलने का प्रयास करूँगा।

कर्त्तव्य की महिमा इस कविता में बताई गई है–

वही मेरा सम्बल है, मेरी आशा मेरी प्रेरणा है वही।
जो कभी न छोड़ते मेरा साथ, मुझे नहीं होने देते अकेला।
रात में भी वही हमेशा रहते है मेरे साथ।
वही हमेशा रखते हैं उत्साहित, भरते हैं अनुराग।
रचते हैं श्रेष्ठ भावनाओं का संसार, देते हैं नई चेतना।
इसमें ही बसते हैं मेरे प्राण, यही है मेरा कर्तव्य।

परन्तु आज के इस बदलते युग में मानव– मानव का शत्रु बन बैठा है। अपने को दूसरों से श्रेष्ठ मानने लगा है। भौतिकता की अंधी दौड़ में लगा है। पारिवारिक ढांचा चरमराने लगा है, भाई–भाई में द्वेष पैदा हो रहा है, एक दूसरे के खून के प्यासे बने हुए हैं। इससे सामाजिक व्यवस्था भी बिगड़ रही है राजनीति भी धर्म, समाज की व्यवस्था खत्म करने में लगी है।

एक समय देश को सक्षम नेतृत्व देने वाला राजपूत समाज भी वर्तमान में किंकर्तव्य विमूढ़ बन गया है। स्वतंत्रता से पूर्व देश का 60% भू–भाग जिनके शासन में था, मध्य काल में जिसने अपने शौर्य व त्याग के बल पर भारतीय सभ्यता व संस्कृति की रक्षा की थी, महान इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने भी जिसकी वीरता की भूरि–भूरि प्रशंसा की थी, वही समाज आज पथभ्रष्ट हुआ बैठा है।

ऐसे ही समय में आजादी पूर्व ही एक महान् व्यक्ति का उदय हुआ जिसने अपनी शक्तियों को पहचाना तथा वर्तमान परिस्थितियों में पतन के गर्त में समाये समाज को अपना कर्तव्य–कर्म याद दिलाने के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। सोये हुए समाज को जगाना सरल काम नहीं था, चारों तरफ अज्ञानता तथा निराशा व्याप्त थी। ऐसे में भगवत गीता को आदर्श मानकर श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। वह महामना थे श्री तन सिंह जी। आप द्वारा स्थापित संघ से जुड़कर समाज के हजारों युवक कर्तव्य की महिमा समझकर कर्म पथ पर निरन्तर चल रहे हैं। पूज्य तनसिंह जी की स्वार्थ रहित कर्तव्य परायणता लोक कल्याण का मार्ग है। ऐसे महान् पुरुष को मेरा शत–शत्–नमन्। ●

अपनी बात

एक रूसी कहानी है कि बर्फ से एक पुतला एक बच्चे ने बनाया। एक दूसरे बच्चे ने उसके मुँह में एक लकड़ी की पाइप थमा दी। एक बच्चे ने अपनी गर्दन के गमछे को उसकी गर्दन में लपेट दिया। एक अन्य बच्चे ने नारियल के सूखे पत्तों की टोपी उसके सिर पर पहना दी। बर्फ का पुतला अकड़ गया होगा। बच्चे पास में खेलते रहे। बच्चों की गरमी से उसे सुखद महसूस हुआ। रात होने लगी, बच्चों को घर लौटना था। उस ठंड में सिसियाते से वे अपने-अपने घर को लौट गए। बच्चों के चले जाने के बाद बच्चों के हाथ से बने हुए बर्फ के उस बुढे को ठंड महसूस हुई। उसके चारों तरफ बर्फ ही बर्फ थी। दूर कहीं शहर की टिमटिमाती रोशनी जरूर दिखाई दे रही थी। बर्फ का बुढा शहर की गरमी की चाह को अपने भीतर पाने के लिए शहर की ओर बढा। किसी तरह वह शहर तक पहुँच ही गया। बिजली की बत्ती के खम्भे के नीचे वह जा खड़ा हुआ। उसकी ठंडक जाती रही। उसने गरमी का आभास पाया। उस खुशी में उस क्षणिक उल्लास में, उसे अपने पिघलने का अहसास भी नहीं हुआ। सुबह हुई, बच्चे घरों से निकल कर गलियों में आए, बत्ती के खम्भे के नीचे बच्चों को तीन चीजें मिली, पाइप, गमछा और टोपी। बिना प्रेम का आदमी ऐसा ही है। पुतला पिघल गया, आदमी मर जाता है, इकट्ठी की हुई सब वस्तुएं यहीं रह जाती हैं। साथ जाने वाले तत्व का संग्रह ही नहीं किया।

प्रेम मनुष्य के भीतर अवतरण है-चैतन्य का। प्रेम मनुष्य के भीतर संगठन है ऊर्जा का। बिना प्रेम के आदमी बिना केन्द्र का है। परिधि है लेकिन केन्द्र नहीं। बिना प्रेम का आदमी एक भीड़ है, आत्मा नहीं। बहुत स्वर हैं उसके भीतर, लेकिन कोई छंद नहीं, कोई लयबद्धता नहीं।

प्रेम जीवन में लयबद्धता लाता है। साधारण प्रेम भी जीवन में लयबद्धता लाता है, तो असाधारण प्रेम, परमात्मा प्रेम की तो बात ही क्या करनी। मनुष्य के जीवन में जब किसी से प्रेम का थोड़ा नाता बन जाता है-किसी स्त्री से, पुरुष से, मित्र से तो उसके जीवन में एक नई रौनक आ जाती है, आँखों में चमक आ जाती है, पैरों में गति आ जाती है, जीवन में छंद आ जाता है, व्यक्ति खिला-खिला लगता है। उसका मुरझापन चला जाता है। व्यक्ति की कली खिलने लगी जैसे सूरज उगा, सुबह हुई और कली ने अपनी पंखुड़ियाँ खोली। वह आकाश में उड़ने लगता है, जैसे पंख लग गये हों।

साधारण प्रेम भी जीवन को कैसा निर्भार कर जाता है, पंख लग जाता है। व्यक्ति आकाश में उड़ने की क्षमता पा जाता है। साधारण प्रेम भी जीवन को प्रसाद दे जाता है, अर्थ दे जाता है, गीत दे जाता है। प्रेम ही व्यक्ति को आत्मा देता है। साधारण प्रेम भी। लेकिन साधारण प्रेम से ही तो हम असाधारण प्रेम का पाठ पढ़ते हैं। परमात्मा की पहली खबर शास्त्रों से नहीं मिलती, प्रेम से मिलती है। साधारण प्रेम दृश्य से प्रेम हुआ है, हुआ तो है। दृश्य से हो गया, जैसे-जैसे गहरा होने लगेगा प्रेम, वैसे-वैसे ही दृश्य में अदृश्य प्रकट होने लगता है। अभी रूप से हुआ, हुआ तो सही, रूप भी तो उसी के हैं। वह अरूप तो रूपों में भी छिपा है। गुरु से जब प्रेम हो जाता है तो वह निकटतम है अरूप के। गुरु से छलांग लग जाती है फिर अरूप में।

श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना में साधकों का परस्पर प्रेम जैसे-जैसे गहरा होता जाता है, वह असाधारण प्रेम की ओर बढने वाला कदम बन जाता है। व्यक्ति से बढकर सीमा शिक्षक, साधना, कर्तव्य व समाज तक बढती है और गहरी बनती जाती है। समाज भी रूप तो उसी अरूप का ही है। समाज के दायित्व, कर्तव्य का इतिहास उस प्रेम में रचने लगता है। तब सीमित नहीं रहता और उस अरूप से लयबद्धता बननी प्रारम्भ हो जाती है।

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर
SS KIRTEE
AN ISO 9001 : 2015 CERTIFIED COMPANY
Piping is Our Business Satisfaction is Our Goal
17425
CML-8600120461
IS:12786
CML-8600120457
IS:4984
CML-8600120464
Mr. Surendra Singh Shekhawat
Director
Shree Ganesh Enterprises
Manufacture Of:-
SS KIRTEE BRAND ISI HDPE Sprinkler Pipe
Mini Sprinkler System | HDPE Pipes & Coils For Water
SHREE GANESH ENTERPRISES
Khasra No. 315/6, 317,318, RIICO Road, Prasrampura, SKS Industrial Area
Reengus, Sikar (Rajasthan)
8209398951 surendrasinghshekhawat234@gmail.com
GANESH
HOTEL
Ganesh Singh Maharoli
Datar Singh Maharoli
Opp. Polovictory Cinema. Station Raod, Jaipur | Contact No. 9929105156

जनवरी, सन् 2025
वर्ष : 62, अंक : 01

समाचार पत्र पंजी.संख्या R.N.7127/60
डाक पंजीयन संख्या - Jaipur City /411/2023-25

संघशक्ति

ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा,
जयपुर-302012
दूरभाष : 0141-2466353

E-mail : sanghshakti@gmail.com
Website : www.shrikys.org

श्रीमान्...

....

....

श्री संघशक्तिप्रकाशन प्रन्यास (स्वत्वाधिकारी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राजेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, डी बी कोर्प लिमिटेड, प्लोट नंबर-01, मंगलम कनक वाटिका के पीछे, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, रेल्वे क्रोसिंग के पास, बिलवा, शिवदासपुरा, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)-303903 (दूरभाष -6658888) से मुद्रित एवं ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष- 2466353) से प्रकाशित। संपादक राजेंद्र सिंह राठौड़। Email : sanghshakti@gmail-com | Website : www-shrikys-org